

2446

9/1/57



ASHA ARCHIVES

2446

1171

अविनेद्वोरा लाई उपदे सग ना को होत कारा यो पढे सर्व ज्ञानि ह न्द ॥४॥ गुरो मिः स
ह सङ्गे न पंडितै स संकथा ॥ कति मिः स ह मित्र स्य के ला तो ना वि सि द ति ॥५॥ सत जं
गु रि स ग संग न पं रि ठ सं कथा हा नु कति ना मित्र ता ग नु ये सो ग दं वि गि न्द ॥५॥
अ र्वे वि श्या प्र दे वी न दु श वि भ र्गो न च ॥ धि रि ता स प्र यो गे न प रि ति तो व र्व सि द ति
॥६॥ अ र्वे वि श्या प्र ला ई उप दे द्वा दि ने उ ह रि ता ई ग ह ना दि ने श र्व संग दि श्या स ग न
ये ति ग न प रि ठि तै ह व स प्र नि वि य व स व य न ग ॥६॥ उ न्म शी ना भु ज ड्रा ना म थ पा
ना च द ति ना म ॥ वि रा ग राज क ला ना न्द वि श्या स न ग ना यु व म् ॥७॥ व हु ला भो स र्ग
भो जा ड र रा या का मा नि स्मो द ति मि श्या म् ॥ अ न्म शी ना भो वि रा ग ना ना नि स्मै ज ये
नि को वि श्या स न ग र्वे वि श्या स ग या दि मि न्द ॥७॥ भो वि रा ग म ह वि श्या स य म नु क र्ते मि च्छ
ति ॥ स वृ क्षा ग्रे सु श सु प्र प्र ति न प ति ॥ अ न्म शी ना भो वि श्या म् ॥ भो वि रा ग म ह वि श्या स य म नु क र्ते मि च्छ

॥ उ. डि. ॥
॥ ३ ॥

मासुतेमैरु न्यतस्का रशात्रुको विद्यासक हिलेनगने ॥ ८ ॥ धनधान्यप्रयोगे सुविद्या
मंगलहो शुच ॥ अत्राहारेववहारेचन्यत्त नज्जामदाभवेत् ॥ ९ ॥ धनकमाउदाधनिको
सङ्गदाविद्यामरुदावादास्मिन्यतिगतात्ना जच्छेडिगने ॥ १० ॥ नगुरुदाहोमाता
नगुरुदाहोमाता ॥ यस्मादेतिमहादेवसंन्यारेदधिदुष्टम् ॥ १० ॥ आमाजन्मदिने
वावुपालन्यामात्रेगुरुतासन्मार्गरेत ॥ दैनस्कारगालेगुरुताईमुख्यमानु ॥ १० ॥
मातागङ्गासमोतीर्थपीतापुस्करमेववा ॥ गुरुकेदारनाथचमातागङ्गापुनःपुनः
॥ ११ ॥ आमागङ्गावावुपुस्करगुरुकेदारसिमाहितपनिआमानवावार्गङ्गासमीमानु
॥ ११ ॥ विद्यारूपंकुरुपाशांक्षामारूपंनपश्चिनांकोकीलानांश्वररूपंनारिरूपंपति
व्रता ॥ १२ ॥ नरात्राकोरूपविद्याहोवाह्नराकोरूपक्षमाहोकोइतिकोरूपस्वहोइतिको
रूपपतिव्रताधर्मथातुहो ॥ १३ ॥ नचविद्यासमोवधुःनचव्याधिसमोरिपुः ॥ नचापन्य

॥ रामा ॥
॥ ३ ॥

समस्ते हो न च देवा न्यं वरं ॥ १३ ॥ या ज्य भाई भन्या तु लो विधौ हो भ विंदा सत जं भया प्रति
देव समा हु न रोग सरि रा तु कौ है न ॥ १३ ॥ विद्या प री सि को मित्रं भा र्या मित्र गु हे शु च ॥ आ नु
र स्यो ष मि मित्रं ध र्म मित्र प र व च ॥ १४ ॥ दु र्दे रा को मित्र विद्या र घ को मित्र सु त्ति रो गि को मित्र
ओ ष दि ध र्म जो हो सो प र को मित्र हो ॥ १४ ॥ दु रा धि ना वि अ विद्या भू जी रां भो ज नं वि ष म्
॥ वि ष गो ष्टि र्द रि द्र स्य वृ ङ्ग स्या स न री वि ष म् ॥ १५ ॥ प ठि न यो के को विद्या र्धे र्दे वा या को
चि ज ग रि व द ज्य भाई वृ ङ्ग कि न री स्वा ह्मि रो मि वि षा स मा हो ॥ १५ ॥ अ ता भ्या सै ह ता
विद्या नि त्प्र हा सै ह ता मि य ॥ कु वि जे न ह तं क्षे त्रं भू त्प दो षै ह ता नृ प ॥ १६ ॥ प ठे र न यो के को
विद्या ज्या दा हा स ते स्ता स्मि म ल ज ल व ल भू स ल वि उ न भ या को र वे त् रं स ल सु र वं स त्रि ङ्ग
ने रा जा लो त र्गो डै वि ग्र न्ध त् ॥ १६ ॥ य स्य पु त्रो न वि षां सो न सु रो न च प रि डित ॥ अ न्ध का रं
कु ल त स्य न ह च न्द्रै प स र्व री ॥ १७ ॥ ज स्को दो रो विद्या प ठ दे न सु रो प ति दै न ते स्को कु ल व न्द्र

॥ कुं द्वि ॥
॥ ३ ॥

मानभयाकाराविजैसधाराहुन्छ ॥ १७ ॥ सर्वरीदिपकचन्द्रप्रभातेरविदिप्रक ॥ त्रैलोक्यदी
प्रकोधर्मसुपुत्रकुलदीप्रक ॥ १८ ॥ राकोवनिचन्द्रदिक्तोमूर्यनिंलोककोवनिधर्मरस
नविद्योपुत्रकुलकोवनिहो ॥ १९ ॥ यनेताचोमनेताचोयसुविद्याप्रयच्छति ॥ अन्तदाता
भयंदाताप्रचैतेपितरस्मृता ॥ १९ ॥ आमारवान्दिन्यामालिकगुरुआपत्ताभरोसादिरक्षा
गर्न्यास्मेदपाचवावसमांमानु ॥ १९ ॥ गुरुपत्नीराजपत्निमित्रपत्नीतथैवच ॥ पत्निमाता
सुमाताचपचैतेमातरस्मृता ॥ २० ॥ गुर्मांरानिमिन्यानिसासुरआमास्मेतइपाजनाव
रातरमासैसमांकाहुन् ॥ २० ॥ लाठयतपचवर्षारिदवावर्षारिनाडयत् ॥ सम्याप्रे
षोडशवर्षेषुत्रिमित्रसमाचरेत् ॥ २१ ॥ जस्तेपनिचोराहृत्नाइपाचवर्षसम्मप्यारोग्य
न्याहादिदि१०वर्षसम्मकरविर्गर्तु१५वर्षदेरिहपकाईसंभाइपठाईईलंसिकाउत्तु
१६वर्षपुगेप्रदिमित्रसमांहुन्छछोडतु ॥ २१ ॥ लाठुनातबहुबोदोयाताडनाजवहुबो

॥ राम ॥
॥ ३ ॥

गुणा॥ तस्मात्तु पुत्रस्य द्विष्यथा जातयत्नं च लाडयत्॥ २२॥ दोशे द्विष्यता इष्यारोग
रिन्प्रकाशतया लाईव रुतै दोषं न तस्मात्तु पुत्रं द्विष्य स्मेन लाई हप किंदं किंकुट प्रिगरी
कनपतिप्रकाशतुपदं॥ २३॥ रुच्याभ्या सैपरिडितस्यां प्रजायां किं प्रयोजनम्॥ तावुभौ
यदिवस्यातां प्रजायां किं प्रयोजनम्॥ २४॥ न जातु नेह तन्निवरावरमाडना गरीपकाठं
तमनेवुठोभयापदिबुद्धिभातुनेह नाले दोरा द्विष्यता इवरावैपकाठतु नकाडतु॥ २५॥
॥ नरपुत्रा सुविविधे शास्त्रनियोज्या सततं बुधैः॥ निति ज्ञातुं द्विसंमन्ना भवन्तु खलु फ्र
जिना॥ २६॥ जान्या जंतेदिक्कादिं शास्त्रपठावस निति जान्ते भै सुखं वाट पुज्यते ते
तस्मादरा लेदिंकादिं प्रकाशतु॥ २७॥ पठपुत्र किं सलस्य पठपुत्रदिनेदिने पठतो पु
ज्यते राजा सपठभारवारक॥ २८॥ अल्हिनगरि पठदिंकादिं पठे राजाले पूजा गर्ते
नपठि सुखं भया भर्का को भारिवेकि खानुपली तस्कारा पठतु चानक अविद्योरा

॥ कु. डि. ॥
॥ ४ ॥

माउपदेद्रागर्धन ॥ २५ ॥ गुरो मुख यत्तं यत्तं किमनोन्यस्य योजनम् ॥ विक्रियते यद्यपि
गोविवर्जिता ॥ २६ ॥ त्रिभिर्मात्रेण गुरासि कतु सि काउनु अत्तिर अगुरोरा मो भैलु गा गहना
लगार्दि बुलो हन्तु धन भया किनु डिगा इला ईष्टु गारि यराठ से न लग्ना इवे च दा के मो
न जाउला मूरर्व ज न से हो ला ॥ २६ ॥ न रस्या भ ररां रूपं रूप स्या भ ररां गुरां ॥ गुरा स्या भ
रां ज्ञानं ज्ञान स्या भ ररां क्षमा ॥ २७ ॥ मनु अको गहना रूपं हो रूप को गहना गुरा गुरा
को ज्ञानं ज्ञान को से न गहना सह न शील्यो ॥ २८ ॥ गुरां पृच्छ त्रि मा रूपं शीलं पृच्छ सि
मा कुलम् ॥ सिद्धि पृच्छ सि मा विद्या भोगं पृच्छ सि मा धनम् ॥ २९ ॥ रूप को ह क्वा भ नि को हि
पुष्ट ते नं कुल गुरा शीलं लभन्को मा ज सो धि बो जि गद् ॥ ३० ॥ अ गुरा स्य ह तं रूपं मशीलं स्य
ह तं कुलम् ॥ अ सिद्धे ध ह ता विद्या अ भोग स्य ह तं धनम् ॥ ३१ ॥ अ कुलार्द्र रूपं शीलं रं धं ले
धैलार्द्र भोग ले दू गो ह्ना ई विद्या ले जितम् ॥ ३२ ॥ गुरा भु रदा य ते रूपं शीलं भू रदा य ते क

॥ राम ॥
॥ ४ ॥

ल३॥ सिद्धि भूरायने विद्या भोग भूरायने धनम् ॥ ३० ॥ रूप को गहना गुरा गुरा को गहना
शास्त्र विद्या को गहना सिद्धि धन को गहना भोग हो ॥ ३० ॥ सुकले योजयत्कन्या पुत्रं विद्या सु
योजयेत् ॥ व्यत्राने योजयेत् ॥ उमित्रं धर्मे जे योजयेत् ॥ ३१ ॥ वेस कुलिकी कन्या खोजि विवा
ह गर्तु शास्त्र वरुने प्रकाउतु व्यत्रान्मात्रा तु संग र्धर्म समा मित्र संग लाउतु ॥ ३१ ॥ नात्युच्चः सिरव
रै मेरु नोति निर्मोहर सा नर ॥ व्यवशाय सहा न्या ना ना ति पादो महोदधिः ॥ ३२ ॥ उपाय ले
गर्द सुमेरु पर्वत अग लोह न्न पाताल्प निगोहोह न्न समुद्र माप निपात न स किन्तु न स अ
र्थ ना निज न्ने उद्योग गर्द र ह न न बो डतु ॥ ३३ ॥ श्लोकै न चा त द र्द न पा दै नै का क्षरे रा
वा ॥ अवध्यं दिव सं कुर्या दाना ध्य य न क र्म सु ॥ ३३ ॥ ये क श्लोक वा आधा वा पा उ भ वा ये
क न श्लो स प नि दि न्का दि प ठो स के हि दि न्मा पा जी ला न स्मारा रा प ठ न न द्यो डतु ॥ ३३ ॥
योज नानां सह सारो ब्रजं या ति पि पी ली का ॥ अग व न्ने त ने यो पि प द मे क न ग द्य ति ॥ ३४ ॥

॥ कृदि ॥
॥ ५ ॥

दि का दि हि डे क मि लो वा ह ज्ञ को हि ड न स ह भु ल्दि गे रा हु र प्रति ठा ठ को ठा वै र ह न्द ॥ ३४ ॥
श नै र्प न्था श नै वि द्या श नै र्प व त ल ह न म ॥ श नै र्ध र्म श क्ता म श्च व्या या म श्च श नै श नै ॥ ३५ ॥
ध न्क मा उ दा वि द्या प ढ दा ध र्म ग द्य प व त च ढ दा स्मे त उ यो ग ग द्य वि ला प्र व क धै यै ले ग र्ग ह न्य
ज ले ग रे ना शि न्द ॥ ३५ ॥ गु र भु श्रु य वि द्या पु त्क रे रा ध ने न वा ॥ अथ वा वि द्या यं वि द्या च
तु र्थो नो प त्त व य ते ॥ ३६ ॥ धं ले नो क रिते रु त्वा म त् वि द्या स्मे त चार्थो क ले वि द्या सा रि न्द ॥ ३६ ॥
ए का क्ष र प्र द्य ता र यो गु र ना भि म न्य ते ॥ त्वा न यो नि श तं ग त्वा चा रा डा ले स्वि पि जा य ते ॥ ३७ ॥
॥ एक भ क्ष र्मा त्र प ढा उ ते प ति गु र्गु र ना र्जो मा न्दे नं स य ज्यो नि कु कु को भै प द्वि प्रो डे भै ज
न्म न्द ॥ ३७ ॥ पु ल कं प्र न्य या धी तं गु र म नि धी ॥ न सो भ ते स भा म ध्ये जा र ग र्भ इ व त्ति
य ॥ गु र वि ना भो यै पु ल क नि प ढ ते को र ना र पु त्र पा उ ते त्रि स मा का र्द ॥ ३८ ॥ शि ल्यं शो ल
म ना ल स्य पा रि ड न्यं ति त्र सं ग्र ह म् ॥ अ चो र ह र रा वि द्या प भै ते न्य क्ष यो नि धि ॥ ३९ ॥ शि

॥ राम ॥
॥ ५ ॥

पद्मिणी हितमना लस्य विद्या सुमित्र नृत्या उज्जम मिना विधि हो चोर्न गिरा जाम्ने तले ह दीन हरि
ने हो ॥ ३५ ॥ नदि जन्म निजे ह स्वं जे ह स्वं गुरा उच्यते ॥ गुरा गुरा तरो याति पयो दधि घृतं
यथा ॥ ४० ॥ जगा डि जन्म जि ठा रु न्न गुरा जे हो हो र पै हे दु द जे हो हो द हि म हि प दि धि उ हो
का न्को पि ठ मा गुरा व ठि रु दा धे रै का ल सं सर ह न्द ॥ ४० ॥ किं कु ले न वि शाले न गुरा वा न
पूज्य ते न र ॥ ध नु र्व द्रा वि शु द्रो पि निर्गुरा किं करि ष्य ति ॥ ४१ ॥ दु लो ध नु र्व द्रा राजा का कु
ल्मा जन्म लि यो स प नि गुरा छे त भ ते जे स्को जन्म व्य र्थ हो ॥ ४१ ॥ किं कु ले न वि शाले न
विद्या हीन सु यो न र ॥ ज कु लि नो पि वि द्या श्रो दै व ते र पि पूज्य ते ॥ ४२ ॥ कु ल रूप स्मे को
के कां वि द्यां द त भ कु लिं भ या प नि लो क ले दे व ता जे मा न्द द त ॥ ४२ ॥ ना वा र्थि व भू व दि द्या
या व त्पा र न ग च्छ ति ॥ उ त्ति रो च ग ते पा रै नौ का या किं प्र यो ज न म् ॥ ४३ ॥ वि द्या र स मु द्र स
के री ना उ रू प वि द्या हो वि द्यां द त भ ते भ वार्ता व स द ते सा ला ई ना उ को के की ष ॥ ४३ ॥ गुरां

॥ कु. डि. ॥
॥ ६ ॥

सर्वत्र पूज्यते पितृ चंद्रो निरर्थकः ॥ वायुदेवं न सम्यग्निव सुदेवं न तेजना ॥ ४४ ॥ समस्त
जगामागुणभन्दा तु लोके हि भूतैर्न वा बुभया कावमुदेव कन प्रजागर्दे न गुणि दुदा क स्वता
द्रसर्वे प्रजागारि मान्दवत् ॥ ४४ ॥ गुणा कुर्वन्त्यदु रत्नं दु रपिव सतां सतां म् ॥ केन की गन्ध
मा प्रायं सयंग च्छिष्य द पदा ॥ ४५ ॥ भूमरा लेभ सल र मिलो फल र गो जि रहि डे छे ता ठा
वमेका गुणि जं र गो जि सत पु म्ब ह कु जा हा गै भे रि गुणि ह्म को स का र्ग दि च न् ॥ ४५ ॥
विद्या त्वं च नृप त्वं च न हि तुल्य पराक्रम ॥ स्वदेवो पूज्यते राजा विद्वां सर्वत्र पूज्यते ॥ ४६ ॥
॥ राजा भन्दा विद्या तु लो छे र राजा भा फ ना दे श खो तु लो पु ज्य छे वि द्वा न्त सम्पू र्णो लो क
देश विदे मा स्मे मा पु ज्य छे म स्मा राजा भन्दा पति विद्या तु लो जां न् ॥ ४६ ॥ ए के ना पि सु
पुत्रे रा विद्या पुत्रे न साधु ना ॥ कुलं पु म्ब सिंहे न च न्दे रौ व प्र का र्य ते ॥ ४७ ॥ विद्वां
मुपुत्र ये कर सिं ह च न्द्र मा स्मे त ठ सै र्द ह रौ ना रा भ या मा न रु न्या ठ ज्या लो य क च न्द्र मा

॥ राम ॥
॥ ६ ॥

लेगने सुपुत्रले कुलको प्रकाश गर्दछन् ॥४७॥ विद्या या भाजनं कश्चित्कश्चिन्नुद्यस्य भा
जनम् ॥४८॥ उभयो भाजनं कश्चित्कश्चित्तोभयभाजनम् ॥४९॥ धन्वी या सेतो भाडा को हि द्विको
हि धंका मात्र रको हि विद्या के मात्र भाडा दै कति धी विद्या ज्ञां सेत न भै सुखि छन् ॥५०॥ न स
न्निफलिनो वृक्षान्ममतिगुणिनो जना ॥ शुष्ककाष्ठं च मूर्ध्वं च भिद्यते न च मन्यते ॥५१॥
फलफलफलन्या वृक्षगुणिविद्वांसवै ममत्सरि गर्ददं फलनफलने काठ मुढोर मूर्ध्वके हि
कृतिका माला जे तन्मुढो बालने रमाति मगिति ते मात्र हुन् ॥५२॥ न हि कर्मणि कवा
रि सन्ध्या कालं प्रयोजयत् ॥ आहारे मै पुनं तिन्द्रा तथा स्वाध्यायमेव च ॥५३॥ त्विसंभो नि
न्द्रा भो रवा नुरपाठ गर्तुं स्मेत मो चारथो कसि ध्याकात्मानं गर्तुं ॥५४॥ आहारा जायते व्याधि
गर्भां ऊरुश्च जायते ॥ अलक्ष्मि कश्च मेयायां स पाठा द्वायुः क्षयः ॥५५॥ सन्ध्या कात्मा रवा
ने रोगि गर्भर हे दुर्जन्त पुत्रसुते धन्को नाश पाठ गरे भायुः को नाश हुन्छ ॥५६॥ वेद वेदाङ्ग

॥ कु. द्वि. ॥
॥ ७७ ॥

तत्त्वज्ञो जप होमपरायणः ॥ आशिर्वाद्यपरो नित्यमेष राज्ञः सप्रोहितः ॥ ५२ ॥ वेदपुराणजोति
समडसास्त्रार्ज्यास्तुतिजानेनानयेत्ता ब्राह्मणालाई राजाले प्रोहिततुल्याउतु ॥ ५२ ॥
प्राज्ञः त्रिभोमहिपालच्छुद्रकर्मविवर्जितः ॥ विदुरे च परिच्यगि समदुःखस्य सुखय ॥ ५३ ॥
ज्ञानिको मलपृथ्विकोपालनागर्तजानेयटिपाकर्मन्यागेकाग्रकर्मापतदुःखजान्ते
दुःखदुःखशिशुनापसमतामानेयेस्ताराजातुल्याउतु ॥ ५३ ॥ कुलशीलगुणोपेतसत्य
धर्मपरायणः ॥ नैप्रवीणः पेशलो दक्षो राजा धर्माधीयते ॥ ५४ ॥ कलिशिलवृत्तध
र्मात्मा सत्यवादिचतुरोपदिहने करान्ते काकोसिपालुयेस्तोमंत्रितुल्याउतु ॥ ५४ ॥ कु
रुव्यमतिनलुचमप्रगल्भेयमनार्जवम् ॥ अनायव्ययकर्ता रं नाप्रत्ये निधियोजयेत् ॥ ५५ ॥
॥ दिग्गहाजुवारिदिनारेलोभिपापिज्ञानिविनाकाराधन्कोखचर्गनेयेस्ताराजानतु
ल्याउतु ॥ ५५ ॥ मूलवृत्तिहिताधीः सर्वज्ञपरिक्षकः ॥ अविस्वाव्यवसायाधर्मध्वक्षो

॥ राम ॥
॥ ७७ ॥

विधि यते ॥ ५६ ॥ प-मा को कां जति नि दां गरि ने धै र्य व न स वै र त ह र को परि क्षा जा ने ध र्म
अ ध र्म को वि वा र्ग ने वि द्या ये सा वि वा दि रा व न ॥ ५७ ॥ आ पु र्वे द रु ता वा स स र्व ज प्रि य द र्श
नः ॥ आ र्य श्री ल गु रो पे त य स वै द्यो वि धी य ते ॥ ५८ ॥ का ल ज्ञा ने दा न ना रि जा ने स र्वे स र्व
मि ल ने ये सा वै द्य तु ल्या उ नु ॥ ५९ ॥ पि तृ पि ता म हो द क्षः ब्रा ह्म णो पि तृ व या च क ॥ शु चि
श्रा क ठि त श्वै व स म्प का र प्र द द्य ते ॥ ६० ॥ बा जे वा तु दा ज्यू दे रि वि च क्ष णा ब्रा ह्म ज्ञा ने मि ठो
ग रि कि सिं स ड्र पा क ग र्ज जा ने ति लो मि ये सा ला ई भा ने तु ल्या उ नु ॥ ६१ ॥ स कृ द रु गृ
हि ता र्थो ल घु ह से जि ता क्ष र ॥ स र्व सा स्त्र स मा लो की र ष ले ख क उ च्य ते ॥ ६२ ॥ ए क वा जि
मु ने सा थ वृ ष ने रा म्रो म क्ष र चा डो ले ख ने ब्रा ह्म ज्ञा ने धै र्य व न ये सा ला ई र व रि दा री
दि नु ॥ ६३ ॥ इ गि ता का ल त त्व ज्ञो व ल वा न्प्रि य द र्श न ॥ अ प्र मा द स दा द क्ष प्र ति हा
र स उ च्य ते ॥ ६४ ॥ का ल व य व हा र्ध र्म अ र्थ जा ने मि ठो व ल ने प्र ठि त ये सा ला ई का जि

॥ अं. ॥
॥ ८ ॥

तुल्या ८० ॥ ६० ॥ समस्त कृतशास्त्रज्ञ परिहित अजित अम ॥ धैर्य शौर्य गुरोपेत सेना
अक्षय मिषियते ॥ ६१ ॥ हर्ष कर्ता दशास्त्रज्ञाने विचक्षणा परिश्रमन भयाको येना लाईला
तुल्या ८० ॥ ६१ ॥ समस्त हयशास्त्रज्ञो वाहने श्वपराजितः ॥ धैर्य शौर्य गुरोपेत अश्व
अक्षय मिषियते ॥ ६२ ॥ सान्निहोत्र सम्पूरा प्रहेको सुरो योडा हा कृतिपालु धैर्य वा यस्ता
लाई सवार्तुल्या ८० ॥ ६२ ॥ मेधा विवाक्यदुष्टान् चित्तोपलक्षक ॥ धीरो यथोक्तवादि च
एदुतो मिषियते ॥ ६३ ॥ विलिवे सजाने मन्को कुदो बुद्धने यथार्थकां कनगने धैर्य वा येना
लाई वीकिल वना ८० ॥ ६३ ॥ अतएव कुलीना तांदया कुर्वन्ति संग्रहम् ॥ आदिमध्यावसा
नेषु न ते यास्यान्ति विहयाम् ॥ ६४ ॥ माथिले रिव्यावमोजिका कांजाने कुलित्वोजि
ले रिव्याको कांदिने राजा को हिव रत्नापनि विग्रन्त ॥ ६४ ॥ पारिते सुगुरा मर्ज सु
र्गो दोया सुके वला ॥ तस्मात्पूर्व सह तेषु प्राज्ञ एक प्रशस्यते ॥ ६५ ॥ परिहित ज्ञानि

॥ राम ॥
॥ ८ ॥

ह्रस्वसङ्गसर्वेथोक्तागुणहृन्ःसुर्वदेउसर्वेथोक्तेगुणहृन्ः तस्कारगूहज्जारसुर्वदेति ज्ञानी
एकसाथं विनु॥६५॥ प्राज्ञनियोज्यमानेतु संतिराज्ञस्त्रयो गुणा॥ यशस्वर्गनिवाशेषपु
स्करस्ववनागम॥६६॥ ज्ञानीह्रस्वकाम्मा लायापद्विराजाकोशगुणप्राप्तहृन्ः शहःस्वर्ग
वास तक्ष्मीवृद्धीहृन्ः॥६६॥ सुर्वेनियोज्यमानेतु त्रयोदोषा महीयते॥ अयशश्चार्थ
नासचनरकेप्पनं ध्रुवम्॥६७॥ सुर्वह्रस्वकाम्मा लायापद्वी श्रद्धोसुप्राप्तहृन्ः अजस
धनेनासुः नरकः वासहृन्ः॥६७॥ तस्याद्भूमौ धरो नित्यं सर्वकामार्थसिद्धयत्॥ गुणा
वत्तनियोज्यतेगुणाहीनं विवर्जयेत्॥६८॥ राजासु अर्थलेधर्माः काम्पडा उतानि
मित्तगुणीह्रस्वकाम्मा लाउनु॥६८॥ येत्किञ्चित्कुरुतेभृते शुभं वा यदि वा शुभम्॥
तेन संवर्द्धते राजा सुकृते दुःस्कृतेरपि॥६९॥ गुणिह्रस्वकाम्मा लायापद्वी शुभः असु
भका ज्ञेपरो सापनि तक्ष्मीवृद्धीहृन्ः॥६९॥ यथा हे मपरि क्षेते तापता उनदे दने

खुः दीः
॥६॥

तथापुनरप्यवकुलश्रीलेन कर्मणा मु॥७०॥ जसौ सुनकोपरिक्षा आगो मापे
त्रियेन लेथिचिकाटिद्योटी हेद्वन ते सौ गरिमानि सुकोपनिकुलुसित्तुगुणलेप
रिद्धागनु॥७०॥ ज्ञातव्यं प्रेषणो मृत्या वा श्ववा व्यसनागमे॥ आपत्का ले तथा
मित्रमभाज्या च विभवकसये॥७१॥ सेवक आश्रु विरानुहेनु काम्पाः दाजू भाई
हेनु आपदपदोमा कं गा लमा सि आफनादकि द्वे न हेनु॥७१॥ मृत्या बहु वि
धाराजनु न माधममध्यमा॥ नेतियो ज्या यथा योग्यं विविधे स्वेव कर्मसु॥७२॥
निकोननिको सेवक धेरै इन्दु न ते स्या भला मानि स्वन भला काम्पा लाउनु मध्यं
कन महे मे काम्पा लाउनु मंदा कन मंदै काम्पा लाउनु॥७२॥ आलस्यं मुखरं कुरं
सत वं व्यसनिन सरम्॥ असंतुष्ट मभक्तं च त्रय जे द्रुत्यं तराधिप॥७३॥ अन्धिकुरा
उडा उन्यारि साहा दिचरो जुवा या असंतो विरुता चाक लाई राजा ले छाडनु॥७३॥

॥ राम ॥
॥ ६ ॥

त्यजे स्वामि न सत्युग्र मत्युग्रं कृपरां त्यजेत् ॥ कृपरादविशेष जतस्माच्च कृतना
शनम् ॥ ७४ ॥ अतिउग्र राजा कनकाडिदिनु ॥ कृप कृप नराजा कनपनिद्धाडिदिनु का
जनिकोन निकोपनिन जान्नेराजा कनपनिद्धाडिदिनु ॥ ७४ ॥ वामाभाय्या सुतो
सूखः प्रेयको वाग्विचारकः ॥ निस्नेहो बन्धूवर्गं धत्यजेदस्य महत्सुखम् ॥ ७५ ॥
प्रीती हि भयाकिस्त्रि मूर्खदोरा अद्रायाको कामूनगर्भे सेवक एति कनकाडिदि
यापदि सुखदुन्द ॥ ७५ ॥ न कश्चित्कस्यचित्मीत्रं मून कश्चित्कस्यचित्त्रिय ॥ का
रणादेव जायन्ते मित्राणि रिपवस्तथा ॥ ७६ ॥ कसेको को हि मित्रं न कसेको को
हि पीयारो प्रनीदैन कार्यकारणमा सत्रुपनिहुन्द मित्रुपनिहुन्द न ॥ ७६ ॥ कार्यो
र्थं भजते लोको न लोको परमार्थक ॥ वत्ससि रक्षयं दृष्ट्वा परित्यज्यति मातरं प्रजे
आफ्रकार्यका निमित्त सर्वे प्रेमदुन्द नूधर्मको निमित्त को हि प्रेमदैन नूक सौभ

॥ दुःखा ॥

॥ १० ॥

निदुदूथाकेपदि ईकनवाहानेछाडिदिन्द ॥ ७७ ॥ कुतोव्यसनिनो निन्द्राग्रतृ
प्रस्मकुतोरतिः ॥ कुतमौरव्यं द्रिद्रस्य दुर्जनस्य कुतक्षमा ॥ ७८ ॥ जुवायेदिना
ये कननिन्द्रा लायेन संतोसु प्रयारति हृदै न कंगानूभयापदि सुठका ही होला
दुर्जन नुछे उक्षमा हृदै न ॥ ७९ ॥ तस्करस्य कुतो मान्य दुर्जनस्य कुतक्षमा ॥ वे
त्रया स्त्रीणां कुतः स्नेहं कुत सत्यं च कापि नाम ॥ ८० ॥ वो लोई मात हृदै न दु
र्जन छे उक्षमा हृदै न वे स्या छे उ लो हृदै नः सखि छे उ सत्पर हन्द ॥ ८१ ॥ दु
र्वत्सस्य वत्सः राजा वा लानां रुदितं वत्सम् ॥ वत्सं मूर्खं मो न त्वं वीरणा मनृतं वत्स
म् ॥ ८२ ॥ निर्वलिया को वत्स राजा वा लस्यु को वत्स नु हो मूर्ख को वत्स वो लिर ह त हो
चो को वत्स ठाटू कुराग नु हो ॥ ८३ ॥ अनाथानां दरिद्राणां वत्स वृद्धितपक्षिना
म् ॥ अन्याय परिभूतानां सर्वे अपाथि वीगति ॥ ८४ ॥ अनाथ को दरिद्र को वत्स

॥ राम ॥

॥ १० ॥

षु को वुठा को अन्याय ले मारि राखे को इति को वनू राजा हो ॥ ८१ ॥ व्याधित स्या
थं दिनस्य त्रातुभिस्त्रासितस्य च ॥ हृदये शोकदधस्य मुहद्वर्त्तनमौ सधम् ॥ ८२ ॥
रोगिकन धननासभयाकाकन सनुले दुःखदियाकाकन हृदयमाशोक परे का
कनयेति जनाको औषधिमित्रहनु ॥ ८३ ॥ आतुरे व्यसने प्राप्ते दुर्भिक्षे शत्रुविग्रहे
राजद्वारे प्रशाने च यास्ति इति सवाश्वकः ॥ ८४ ॥ रोगिभैर ह्यामाद्याननपायामा
सनुसितविग्रहगरीर ह्यामा राजद्वारः प्रशानमाजो आफुसितरहन्धः सोभा
इभन्तु ॥ ८५ ॥ भावशुद्धिपनुष्याणां जातव्यं सर्वकर्मसु ॥ भावेन च विताकांता
भावेन दुहिताननम् ॥ ८६ ॥ मनुष्यहरकाके हीकां गदां मा भावनाले शुद्धहन्ध
कसोभने सिक्को सुखको वुवनाक्या भावनाले गरिंद दोरिक्को सुखको वुवनदेव
ताद्वत्तसथले भावनावाहिन्द ॥ ८७ ॥ नदेवो विद्यते काष्टे पाथारो नवम्

॥ उः वा ॥
॥ ११ ॥

रामये ॥ भावे बु विद्यते देव सस्माद्भाव महोत्तर ॥ ८५ ॥ हेरज सेतु गामा काठमा दे
वता अथ वस्यै दे ननु ॥ भावना गरि पुजा गर्दा प्रत्यक्ष दुन्दु गरी शमनी पुजा ग
रे सुठ निस्कन्द ॥ ८५ ॥ शिष्याणां देवता चार्यो जानमाचार्य देवता ॥ देवता ये
षिता भर्ता ब्राह्मणा जन देवता ॥ ८६ ॥ शिष्या को देवता गुरु गुरु को देवता जान
स्त्रि को देवता पुरुषः सर्वे को देवता ब्राह्मणा हो ॥ ८६ ॥ विप्रं पश्येद्यथा बहि माचा
र्यं पश्येदेवता ॥ पृथ्वीं पश्येद्यथा माता मित्रं पश्येद्यथा सुतम् ॥ ८७ ॥ ब्राह्मणा
ना इन्द्राग्निः शैमानु गुरुः ना इन्द्र देवता शैमानु आमा ना इन्द्र पृथ्विः शैमानु द्यौरा कन मि
त्रं शैमानु ॥ ८७ ॥ गुरुरग्निः द्विजातीनां वरुणा नां ब्राह्मणानां गुरुः ॥ पतिरेको गुरुः स्त्रीणां
सर्वेषां भ्यागतो गुरुः ॥ ८८ ॥ ब्राह्मणा को गुरुः अग्नि चारै जात को गुरुः ब्राह्मणा स्त्री
को गुरुः स्वामि सर्वे को गुरुः अग्न गत हो ॥ ८८ ॥ उत्तमस्यापि वरुणां स्य नीचोऽपि

॥ राम ॥
॥ ११ ॥

एहमागतः ॥ पूजनियो यथान्यायं सर्वस्याभ्यागतो गुरु ॥ ८१ ॥ उत्तमभयाप
निनिचोभयापनि अभ्यागत्यर आयापदीमानैपदं किनभनेसर्वकोगु
रुआभ्यागतहो ॥ ८२ ॥ देवतापूजयद्रुत्याभृत्याक्षनेनपूजयेत् ॥ शुद्धः पू
जोपहारैराविप्राणां मभिवन्दनम् ॥ ८३ ॥ भावतालेदेवताकोपूजागर्भुसैव
कुरिशाउनु। धनदिकनसुद्रिशाउनुउपकारगरिब्राह्मणारिशाउनुनम
स्कारगरि ॥ ८४ ॥ धर्मस्यमूलराजानः सप्तोमूलंचव्राह्मण ॥ ब्राह्मणोय
त्रपूज्यंतेतत्रधर्ममनातनः ॥ ८५ ॥ राजाकोमूलधर्मब्राह्मणकोमूलतप
स्याब्राह्मणाआदगरिजाहोपूजागर्भनृताहाधर्मरहं ॥ ८६ ॥ आचारांफ्र
ल्लतेधर्मआचारात्फल्लतेधनम् ॥ आचारात्फल्लमाप्नोतिह्याचारीहंत्यत
क्षराम् ॥ ८७ ॥ नेमनिशागरिधर्मपाइन्दधनूपनिहुन्दसर्वेफ्रजपनीपा

॥ बुद्धि वा ॥
॥ १२ ॥

इन्द्रमलदिशाघको जान्द ॥ ५३ ॥ भोजे भोजन त्राकिध रति त्राकिर्व रत्नीय ॥ विभवे
दान त्राकिध नाल्यस्य तपस्या फलम् ॥ ५४ ॥ खाने वस्तु जोरे को छ तन ज विजमिला
ई खाने खुवाउ तस कनु पर्द भनया दांगे त्राकिचा हिन्द रा विस्त्रि क न रा जिरा विभो
गगने स कनु पर्द सुखि धातु थोरे तपस्या ले पाई न ॥ ५५ ॥ बाले चै व वरे धर्म मनि न्य
खलु जीवितम् ॥ फलना म पि पकाना मा स्वतं पतनं भ्रुवम् ॥ ५६ ॥ बाला वलै दे विधर्म गदे
रहनु पर्द यो सत्सार स्वप्राजलो अनित्य दुपाके को फलये सवेला वयमा सुख वाट रवन्द म
न्या जसो थाहा हुन सरि पनि यो उमेरु गिमर्द भन्याटे गान्दे न ॥ ५७ ॥ सदे मने नह तो धर्म को
धे नै वहतं तपं ॥ अहरे तह तं ज्ञानं प्रमादे तह त भूत ॥ ५८ ॥ सबै भन्दा सिपा लु बुद्धि मां ज
कलि महु भनि अहकार्त्त धर्म रिमले तपस्या भक्ति न भया ज्ञाने सतना स इन्द्र सखि ले वि
या को ना स इन्द्र ॥ ५९ ॥ अदि प्रेगे नो हता हो मो हता भुक्ति र साधिका ॥ उपजि व्याहता कन्या

॥ रा म ॥
॥ १२ ॥

त्वार्थेपाकहताकया ॥ ९४ ॥ नवलेकाजगिमाहवंगर्तुआप्रातिमितामिठोवताईजाहंला
देनदिरवानुदोहरीसर्वलिकन्यादांगर्तुयेतितेअधिल्लाजन्मकोपुण्यस्मेतनाशाग
र्ह ॥ ९५ ॥ दारिद्र्याधिदुःखानिवन्नुनव्यशानानिच ॥ अदातुफलमेतानितस्मादा
नंविशिष्यते ॥ ९६ ॥ अयिल्लाजन्मसादांनगर्तेदरिद्रिजोगिपापिदुन्ददानितिशेगीअ
नितिविशंहरन्ममभर्थदीधर्मजर ॥ ९७ ॥ पुलकाद्वधान्नेषुपुत्रिकाद्वजनिषु ॥ द्वादशा
स्तोमनस्येषुएवधर्मवहिकृता ॥ ९८ ॥ दाम्भर्गितेमन्त्रभयाकाजंभाकापुनलिवापेण
यासमाईचौदासिलारयोनिमाफेरिपतेदत्त ॥ ९९ ॥ नागिस्तृप्यतिकाष्टानांनजराणां
चमहोदधि ॥ नानकसर्वभूतानांनप्रसावामलोचना ॥ १०० ॥ दारुवाजतिथपेप्रनि
मग्निसंतोषहनरुजतिजलथपेप्रनिसमुद्ररुजतिपुरुषभयापनित्विसंतोष
हन्त ॥ १०१ ॥ न्यजेडर्जनसंसर्गभजसाधुसमागमम् ॥ कुरुपुण्यमहोरात्रसरति

॥ कुचा ॥

॥ १३ ॥

न्यस नित्यता ॥ १०० ॥ यो सत्त्वाभनित्य कर्कलाकापात्मा रहते सोति मैजाति धर्मदां यज्ञ
जपत सभां सत्संग गरुड जं भूमि को संक्रु के हे प्रतिनगर ॥ १०० ॥ तत्सत श्रीवा नके
सा रसजु हे प्रथम ग्राहकम् ॥ ० ॥ ० ॥ शास्त्रार्थ च क्षुमा विद्वान्नेरेन्द्राति तिचक्षुषा
म् ॥ वेदार्थ च क्षुमा विप्रा इतराचार चक्षुषा ॥ १ ॥ सत ज्ञानि को भ्रात्रा शास्त्रि राजा को
नीति ब्राह्मण राहस्य को वेद भूको भ्रात्रा चर्च वादो ॥ १ ॥ राजा धर्मा री धर्म ज्ञापये पा
प्र समागम ॥ राजानो दुर्निवृत्त स्याद्यथाराजातथा प्रजा ॥ २ ॥ राजा धर्मात्मानि ति वां
भयादु निजा हरुपति तलै रुन्दे जलाराजा तलै प्रजा ॥ २ ॥ उद्यम साहसं वैर्यं बलं व
द्विपराक्रमम् ॥ षडेते यस्य लिख्यं तिस्य देवो पि शंकीत ॥ ३ ॥ सामदान उराड भेदगु
राशि लवु द्विपराक्रम नि ति स्मेत जाने राजा देवि देव ताकारा जा इन्द्र स्मेत उराड
दभ तेना बुक्का उरावेनत् ॥ ३ ॥ सामदान उराड भेदेन क्रमेण च बलेन च ॥ सर्वतस्तु

॥ राम ॥

॥ १३ ॥

सदाशत्रुघोतनीयोनराधिपे ॥४॥ अल्पाईफकार्दहपकार्दपकार्दप्रजासुसिराखनेवदिन
याकाराजाकोशत्रुहस्तलेदिदुपाउननसकिसधैवात्रुहस्तउराउद्वत् ॥४॥ पात्रेत्यागोगु
गोरगोभोगेपरिजनेसह ॥ शास्त्रोवोभोरगोयोधोनपतेपञ्चलक्षणात् ॥५॥ पात्रेहेरि
त्यागगर्भुगुणिदेखिरुसिद्धतुदुतिजाहस्तनाईजाहंसद्रुगर्भुशास्त्रजानुयुद्धमासुरो
द्रुयेतिराजलक्षणादो ॥५॥ उत्तमप्रणिपातेनसुरोभेदेनयोजयेत् ॥ लुद्धमर्थप्रदानेन
समतुल्यपराक्रमे ॥६॥ दुल्लासद्रुनमृतासुरोसद्रुभेदलोमिलार्द्धपराक्रमिसद्रुपराक्रमे
लेहासलितुपद्व ॥६॥ आत्मादिद्रुम्परदद्याद्विद्यादिद्रुपरस्यच ॥ गुडेकर्मद्रुसंज्ञानि
परभावंचलक्षयेत् ॥७॥ आप्रोदुस्वसुरविद्यामकीलार्द्धदिनुनसौठस्कोपनिद्रुहलि
नुअकीकोनरात्रोक्रोकरोहिल्येकसैसंगनगर्भु ॥७॥ सतसाविनयेत्कार्यवचसान
प्रकाशयेत् ॥ मंत्रलक्षणागूढात्माकार्यसिद्धिश्चजायते ॥८॥ केहिकांगदासैलेमा

७७
॥१४॥

त्रविताउनुमंत्रैगुप्तगरिराखनुकार्यसिद्धिगतगरिप्रकाशानगने॥८॥उपकारगृ
हीतेनवात्राणावात्रमुद्धरेत्॥पादलग्नःकरस्थेतकराटकेनचकराटक॥९॥वीणा
रुमनेकोवात्रस्मेतकसेकोनगर्तुहातोडाहकाकाठाकोढैलेमिकनुपद्य॥१०॥वहेदमि
त्रस्कन्धेनयावत्कार्यविवर्ययः॥तथैववागतेकालेमिद्यात्परमिवास्मति॥१०॥विमनिप्र
देशात्रुलाइकाधमावोकिकार्यसाधनसिद्धमयापदिमाराकाफटेकाभाडाइमित्काइदिनु
॥१०॥हेजिह्वेवरुतिहेमधुरकिंनभाशोभा॥मधुरवदकल्याणिलोकोयमधुरप्रिय॥११॥
हेजिह्वोकडावचनबोलमधुरवचनलोकराजीहमोबोल्॥११॥जिह्वोगेवनातेत्वस्मि
जिह्वोगेमित्रवाभववा॥जिह्वोगेवन्धनंचापिजिह्वोगेमररांध्रवम्॥१२॥जिह्वकाड
पामालक्षिमवसेकिहमधुरबोलीइत्यमित्रराजापर्जादिनेदित्नाउतेवन्धमोक्षस्मेतबोलिमे
इतसन्नर्थप्यारोलागेमधुरबोलिबोलिलोकवसगर॥१२॥अग्निदोगरदशैवशस्त्रपाणि

॥१४॥

धनाप्रहासः॥ क्षेत्रदारापहारी च खदेते आततायिनः॥१३॥ आगोलगाठन्याविरव्याउने
स्त्रिवालन्यस्मे तप्राणिमान्याजगापोलन्यावाह न्यायतिपापलाई आताताई मन्द
॥१३॥ आतताइनमायानमपिवेदाङ्गारगम्॥ जिघासतं जिघासीत्यां न देवा ल
राहा भवेत्॥१४॥ अङ्गास्त्रवेदवेदाङ्गमायार्भयाकालेयकजनासायादङ्गाजनाका
चनेमयासागयाका आताताई पापलादेन॥१४॥ राष्ट्रपालयते नित्यं सत्यं धर्मं परा
यथा॥ निर्जित्य परं सैन्यातिप्रतिधर्मं रापालयेत्॥१५॥ राजाले नितिधर्मं जातिधर्मं लि
प्रजापालन उपर्द्धधर्मं लेशत्रुजित्पुर्द्ध॥१५॥ पुष्पं पुष्पं विचित्रं निमूलक्षेत्रं न कारयेत्
॥ मालाकारद्वारा नियथा जानाति शारताम्॥१६॥ माली हस्तले फल रिद्धा वोटको
वडोहि पाजत संगति पद्धि उङ्गदी राजाले पनि सो वमो जिं प्रजा हस्तको मडक वचाई डी
गर्तु पद्धि॥१६॥ अरिमित्र मुदासीन मध्यस्थं स्थं विरंगु हम्॥ यो न बुध्यति मन्दात्मा

॥ कुङ्किचा ॥
॥ १५ ॥

सच सर्वत्र नश्यति ॥ ७ ॥ योऽत्रात्रुयो मित्रुयो मध्यस्थयोऽदासि यो गुह्यमभिनन जान्ते व्यवहा-
रिजो हो सोऽत्रात्रुका हात्मा परिनामिन् ॥ ८ ॥ अनाय व्यय कर्ता च भूनाथ कलह प्रिया-
आतुर सर्वभक्षि चरराशि घ्नं विनश्यति ॥ ९ ॥ आम्हानि कोया दनरा विरवर्चार्ने राजा-
नभया काजगा माऊग डागन्यारोगि मैकु फत राव्या हस चाडै नाशित्वन् ॥ १० ॥ कका-
लका निमित्राणि को देहा को व्ययागमौ ॥ कस्याहं काचमेशक्तिगिरिति चिन्ता तुह-
सुहृद् ॥ ११ ॥ कालभो मित्रभो आम्हानि विरवर्चभो देहा भो कलभो आप्रो सामर्थ्यभो भ-
यिगन्था काव्यवाहो मित को वरावर्या दगर्तुपर्द्ध ॥ १२ ॥ मिहो देवं च का देवं शिष्ये च-
चारि कंकटम् ॥ वायसात्वं च शिष्ये च अदभूते स्त्रिणि गद्धभात ॥ १३ ॥ सिंह को ग-
रायक वक्त्रला को दुर्गकरु रा को कादकाग को पाचक कुको दगदा को उग गालिग ॥ १४ ॥
॥ प्रभूत कार्यमल्प वायान कर्तुमिच्छति ॥ सर्वास्मेषु तत्कार्यं सिंहादेकविधीयते ॥

॥ राम ॥
॥ १५ ॥

२१॥ जाकुले जाटिग याको जेकां भयापनि सिद्ध नगरि नखेड न्यासिंह हो नसे जाकुले
पनि गर्नु ॥ २१॥ इन्द्रियाणि तु संयम्य वक्त्रं त्वरिडितो नरः ॥ कार्यं कालोपपन्नानि
सर्वकार्याणि साधयत् ॥ २२॥ वकुलगाले माछा माज सोध्यां दे प्रकृत्य तसे गारि
ध्यां गारि कार्य सिद्ध गर्नु पर्द ॥ २३॥ प्रागुत्थानं पुद्गलं च संविभागं च वधुधु ॥ त्रियमा
कृत्य भुजितं त्रिष्टे चरि कुकुरात् ॥ २३॥ सवेर उठ नुवा नुहस संग पुद्गल नुदा ज्य भाई
हस वरोवर देव नुवले ले सिंसंग भोग गर्नु यो चाको मऊ गुराको भसल्ल सोलिनु ॥ २
३॥ गूढ मैथुन धुर्न त्वं काले वाध्वसंग्रहम् ॥ अप्रमादं धुधुर्न त्वं त्रिष्टे पञ्चायवा
यसम् ॥ २४॥ गुप्संग मैथुं गर्नु चला कडु नुदा ज्य भाई हस संग मेलानु नई कारदा
उ नुवन्धु मूगे वलु यो पाच गुरा काग्मा दे सोलिनु ॥ २४॥ बहा शिवा ल्य सं नुष्टः सु
निन्द्रा शिचु चेतनः ॥ स्वामि मत्तश्च मूरश्च यडे ते स्वान्तो गुरा ॥ २५॥ भये धैर्ये र

॥ व. च. ॥
॥ ५६ ॥

नभयाभयाजत्रिरवार्धसंनोषाहनुवाडोमुनसवेउठनुस्वामिभक्तनुसुरोहनुयोऊऊमोह
मोलिनु॥२५॥अचिश्रातवहेद्वारसीनोहमंचनविद्यते॥मुसनुष्टोभवेनित्यंस्त्रिगिदि
ष्टेचगर्दभात्॥२६॥वोकायेजतिभारिवोकनेगर्मिजाडोयेकैमानेजतिदियाकोखार्धसं
नोसहुनुयोइकागदाहामाधसोलिनु॥२७॥विंशत्येतागुराःप्रोक्तायसुकुर्याद्विचक्ष
राः॥सलेखेभिरिपुन्सर्वान्विजयीध्वमविष्यति॥२८॥योलेखियाको२०लक्षराजस्मनुअ
लिलिकामगर्दशत्रुनाशगरिजहागयोताहाकोकाफत्यपाह॥२९॥असुर्वायेमनुष्याणांमन्य
सतप्रचेतथांम॥प्रस्मदोपकोरेणपुंसांभवतिविग्रहम्॥३०॥ज्ञातिसतजन्तेआफ्रोदुःख
कोदयानगन्याहमसंगपुकार्तेगर्त॥३१॥एकोदरापृथग्ग्रीवायेचरनिमाहारावे॥असा
धितावितश्यतिभैरराडाइवपक्षिणः॥३२॥एवपेरुईराउकोभयाकोसमुद्रमावत्सैभैर
राडापक्षितेअगडागर्दरिसलेयेकडाउकाविषखादादुवैमर्दतेस्काररात्तेअगडानगर्त॥३३॥

॥ ग. म. ॥
॥ १६ ॥

व्यसनेसति कुर्वन्ति येन केनापि संजतः ॥ अक्षवानरगोपुच्छैः पुरादात्रारथिर्यथा ॥ ३० ॥
विप्रस्य दीदुलालेसानासंजुपनिखुसासतगर्भपदहेरसाक्षात् ईश्वरीमचन्द्रलेभालुवाद
कोसाहनालेरावगाला ईमारिन्नकाजितुभो ॥ ३० ॥ दुस्तारंसागरंतीर्णं समग्रं वानरं स्व
लम् ॥ अभूतपूर्वं रामेणात्रोत्तुवन्धुजायते ॥ ३१ ॥ धैर्यं कदाभालुवानर्त्तं समुद्रमापुत्वा
क्षिपारौ लङ्काजिते धैर्ये लेगरीकेकांज्जन्मसर्वे मिदुद्रन्द ॥ ३१ ॥ यत्पञ्चाशत्तवयपञ्चवि
रोधञ्च परस्परम् ॥ परैराकृत्यमनितुम्वयपञ्चोत्तरं ज्ञातम् ॥ ३२ ॥ तिमिह मशायहामिपा
चमिलिज्जकीला ईजितुहामिह मविरोधनगमं भनियुधिश्चिराजालेदुज्योर्ध्वगामैग
भनुभयेथो ॥ ३३ ॥ हित्वा भित्वा च कर्मणि कृत्वा वैरिमन्त्रानकम् ॥ ज्ञातयः समताया
नियपः परस्परवसः ॥ ३३ ॥ हेमा ईहोहामिसर्वे मिलिशुहृदकोनाशगरोभन्दानमानि
अधर्मगत्या दुज्योधकोसम्युराणाशभयेथो हेर ॥ ३३ ॥ चिन्ताज्वरं मनुष्याणां मश्वा

॥ बुद्धिवा ॥
॥ ११ ॥

नामातपो ज्वरम् ॥ असौ भाग्यं ज्वरास्त्रिणावस्त्राणां वा तपो ज्वरम् ॥ ३४ ॥ दिनो रेजुवारीभीषारी
हिडारिसर्पेचिनागरिहीउन्यायेतिगर्नामानिषवाधिमात्रारवेकोयोडा ॥ दवर्षनायिलोत्तेन
पाउनेस्त्रिद्विबाडैनुठाहन्वन् ॥ ३४ ॥ अथाजरा मनुष्याणां वा जिनाम्बन्धनं जरा ॥ अमैथुनं जरा
स्त्रिणां मन्त्रीनां मैथुनं जरा ॥ ३५ ॥ मनुष्यकोज्ज्वर्चिलारयोडाकोजातपकिहोस्त्रिकोविधवावस्त्र
कोपुरातुरवाप्रस्मेतहोर्धेरैसंगभयायोडिस्वाधीयाकायोडास्मेतचाडोनुठाहन्वन् ॥ ३५ ॥
कष्टबुद्धिपराधीनां कष्टावाज्ञानिराश्रया ॥ भूतपूर्वार्थसंयुक्तो सर्वकष्टादरिद्रता ॥ ३६ ॥ चाक
रिरभर्काकाअधिन्मारहनुवाजाक्रोयर्नमैरहनुअधिधनोपदिदुःखपाउनुयोसर्वकष्टहोयेस्मन्दा
दरिद्रहनुतुलोकष्टहो ॥ ३६ ॥ अर्थितो व्याधितो मूर्खः प्रभासिपरस्येव क ॥ जीवितोपिमृतः पञ्च
प्रज्ञैर्मेदुःखभागिन ॥ ३७ ॥ सर्वैर्भर्काकोचाकरीगतेरोगिरमूर्खेऽपदेद्रामात्रैजाने ४ सर्वैकज्ञा ॥ राम ॥
लिहनुयोवाचेतापनिमरेकैतल्यहन् ॥ ३७ ॥ अहिरायमुदासीनगृहज्जोरसवर्जित ॥ प्रतिक ॥ ११ ॥

लकलत्रं च मनस्कस्यापि परो विधिः ॥ ३८ ॥ सुखादि रत्नैर्गाई देवता पुस्तक वा प्रितिनभया किञ्चि
होराहमखुखावुठिनभया को धर्ती ईधने भन्तु ॥ ३८ ॥ स्थूलजङ्घो यदारामो लक्ष्मणसद्वगा मिना ॥
धनके श्री यदासीता तदा ते दुःख भागिन ॥ ३९ ॥ श्री रामचन्द्र जी को जाय कुलोलक्ष्मण हिड दा जम्ला
पडकने हुलो रगसिता को रुदा हे रुज रुत्से त को या त ताति जनाले सह नु पयो ॥ ३९ ॥ परान्तर
वस्त्रं च परपानं परस्त्रियः ॥ परस्य च गृहे वा द्वाका स्यापि शीयं हरेत् ॥ ४० ॥ सधैर्भर्ता यर्जा न्या भनक
पडा जडा वरिला ठन्या परस्त्रिमाग मंगन्या ये सा इन्द्रसमा का धनि भयापनि ना द्वा भै आदर्भा ठरुन
॥ ४० ॥ यो यत्र नित्यमायाति भुङ्क्याति दिने दिने ॥ सत्रलघुतां याति यदि द्वाक स मोनरु ॥ ४१ ॥
॥ भर्ता को धैर्यारो ग रिसधैर्गैव हरेवाने माग्नेग याईन्द्रसमा का भयापनि हल्का रुन्द ॥ ४१ ॥
भसो व्योनिर्द्वेनो विद्यान्मशो व्यो पुत्रवानर ॥ मन्त्रो व्यो विधवानारी पुत्रपौत्रप्रतिष्ठिता ॥ ४२ ॥
॥ जानिष्ठतपनिक ज्जालमयो शुद्धरुन्तये सा को ह्योरानभयेपनि दोषधै न ह्योरानातिरुने विधवा

॥ बुद्धिचा ॥
॥ १८ ॥

कोपतिदोषतादेत ॥ ४२ ॥ विभवासर्वप्रज्यनेनशरिराशिदेहिनाम् ॥ चाराडालोपिनरः श्रेष्ठे
यस्यास्तिविपुलंधनम् ॥ ४३ ॥ सर्वे लोकलेमानिसत्ताईमान्यैतंधनभयाचाराडालोपतिमानाई
न ॥ ४३ ॥ धनमाहुपरंधर्मधनेसर्वप्रतिष्ठिते ॥ जीवनिधनिनो लोके मृतायतेधनानरा ॥ ४४ ॥
धनिद्वभनेइमान्दार्ढ्यमिजिउदोईभनिलोकेलेमान्दन्सतजंदधन्यैतभनेजिदोला
ईमुदीसरिहेलागईद्वर्धनन्दाहुलो लोकमाकेहिद्वेन ॥ ४४ ॥ अतिसम्यदमापन्नंभेतव्यंपत
नाद्रयम् ॥ अत्युच्चशिरवेरुहसत्यं वज्रशापातित ॥ ४५ ॥ धन्वेर्भयोमातिन्दभरियोषोरिन्दभ
ग्लोपर्वतवज्रलेजसरिरवसाल्धनसौरवसद्ध ॥ ४५ ॥ कोभक्षोभक्षकोनित्यं कः सुखाशिचरोगीरा
म् ॥ यस्यभार्यात्वसनुष्टाकचतस्योत्सवगृहे ॥ ४६ ॥ सर्वभक्षिअग्निअसुद्धकाहालारोगिरअ
सनोकिस्त्रिकाप्रसयत्ताईरतिर्धनित्ताईसुखकैहेहोला ॥ ४६ ॥ मोमिक्षकर्षकोनित्यंसुखं
नित्यमरोगिराम् ॥ भार्याभर्तृवशायस्यतस्यनित्योत्सवगृहे ॥ ४७ ॥ आक्रामयाजतिमा

॥ राम ॥
॥ १९ ॥

संनोसभैनिष्किम्भैवल्लेजकाधरलाईभुमविद्यैगर्नेस्त्रिवस्माभयाकिनिरोगिजोद्वसोअखिहो
तेस्काधर्मासधैमकुल्ल॥४७॥सर्वपरवसंदुःखंसर्वमात्मवशंशुखं॥एतद्विद्यात्समास्यतलक्षरां
सुखदुःखयो॥४८॥आफ्राभयाकाधंजन्मासंनुष्टनभैवाधरिगर्नुद्वलंगरिपुरुसार्थलेधैनकमा
ईअर्काकाधंजन्मारिसगरिकशरीतेस्कोधंजन्मासगसभनिहिउगुदुःखहोसंनोधिमुखिहो॥४९॥
८॥सुखस्यानरंदुःखदुःखस्यानरंसुखम्॥सुखदुःखमनुष्याणांचक्रवत्परिपन्नते॥४९॥सु
खकोअनर्मादुःखदुःखकोअनर्मासुखकुमाल्काचक्रैद्युत्तेदुःखसुखहोदुनिजाहस्येद्रको
गतियेहिहो॥४९॥वह्निमिसुखसंघातेरभ्योन्यंपशुवृत्तिभिः॥छादयन्निगुराणान्सर्वान्मेधैरिव
दिवाकरम्॥५०॥धैरैरुर्वभयात्तानिजंहरुलाईपनिष्कप्येत्ताईवादल्लेढाकेऋढाकक
तरधैरैरसकतैर्नृ॥५०॥असतासहस्रैर्नकोतयात्यधमागतिम्॥पयोपिसौरिडिमीहस
मध्यमिभ्यभिधीयते॥५१॥कुत्राकासकृतेसतिपनिविग्रहमदवातिमुठेतिलेअमृत्वाड

॥ उद्दिष्टा ॥
॥ १९ ॥

को घडा बो किल्याया पतिमदि रै हो भले संमन्द त ॥ ५१ ॥ असत्सम्पर्क दोषे न अधमाया
नि साधक ॥ मार्ग सिमि र दोषे रा समोपि विषमायते ॥ ५२ ॥ अन्धकारे वा यो स्मे तजे
रुदुर्जत्तले सत्रर्ज ह रुत्ता ई को पप्रदं तस्कार रा दुर्ज ह रुत्ता ई न्या ग गर ॥ ५३ ॥ उन्नै मे स
ह सङ्गे न को न या नि स मु न्त नि ॥ मूर्द्धा स्मृ रा नि धार्य ने गु थि ते कु सु मे सह ॥ ५४ ॥ हे खडा
को सङ्ग क तो र हे द्वा हि लो वा र नि र्के को क म मा यो वा र नि र्के को फ ल्कु ल श्री सूर्य को सङ्ग
ले क तो प्यारो द्वा ॥ ५५ ॥ किम्करी श्यति स सम्पर्कः स्वभावो दु रति क्रम ॥ पत्या म्ना फलं मध्य स्थ
क श्रा यो ना म्ना ता ग म ॥ ५६ ॥ ज्या सा अ धर्मि द्वा त भ ने ता नि ज न्को सङ्ग ग रो त प नि आ प को
को यो र्मे मि त्र को च रो जो दे त त सै अ धर्म र ह न्द ॥ ५७ ॥ शर्करा व सु व न्धे त मध्ये नि प्र प ति स्थित
॥ मधु क्षि र स मा वृ त्ति नि प्र किं म धु रा य ते ॥ ५८ ॥ सख र चि नि स ह मि श्री मा रो पे को नि स को र
ए वा ड नि मा मि से का नि म्का पा र वा दा ति तो जा न्त त सै अ धर्मि का अ धर्म ता नि सङ्ग को स

॥ राम ॥
॥ १९ ॥

इलेपनिजान् ॥ ५५ ॥ पुस्तकेषु च या विद्या परहते सुयदतम् ॥ कार्ये काले च सम्प्राप्ते
न सा विद्या न तद्वतम् ॥ ५६ ॥ अर्का का हात्मा प्रपन्ना कोर्ध हे दीमात्रमा उन्मा पुस्तक को विद्या
अर्का का हात्मा प्रपन्ना को लागे न यत्र उपाय वाट को लाग्दा रं राउ धृष्ट वाट की लाग
ला ॥ ५७ ॥ उरस्या निच मित्राणि निस्त्रिहानि च वा भववा ॥ काना काले रव्य श्रयः काले तोप
तिष्ठति ॥ ५८ ॥ वन्मा फले का च मे निरता का वसे का दृष्ट मित्र हर्षे सारि सग न्या दा ज्यु भा इ ह
का म्ना जे देत न ॥ ५९ ॥ अत विदु म पुश्चारी उरस्थानि वा भववा ॥ काना काले रव्य रूपा श्रका
ले तोप तिष्ठति ॥ ६० ॥ चित्रकारि ले ले रेवे का वा य सिंह भालु स्मेत ले विथोर्ध कि भने ड र्मानु र आ
प्रो हित न ग र्ने दा ज्यु भा इ ह र को भर्ष नु र कै हो ॥ ६१ ॥ प्रज्ञा वचन हीन श्र कर्म हीन सुयो
न र ॥ निरर्थ चेतना तस्य भस्म न्या हुत यो यथा ॥ ६२ ॥ न जाने ले ग्या न्को क रोग र्ने न जा
नि जान्दु भनिकां ग र्ने र वरानि मा धि उ हाल नु र्मे हो ॥ ६३ ॥ छाग युद्ध मृषि आ द्द दम्पत्यो

॥ अङ्गि चा ॥
॥ २० ॥

कलह नथा ॥ चत्वारो निष्फला यानि प्रभाते मेघ उन्मर ॥ ६० ॥ वोका कोर लो गे स्वास्ति
हस्त को जगडा परा लो भा गो विहा न व से को वा द ल ई स स्यु र्गो ये क क्ष रा क ऊ त् ॥ ६० ॥ नि
स्फला क प रो शे वा नि स्फ ला र नि चा नु रे ॥ दो ष सं यु क्त शी ल स्य श्रु ति वि प्र स्य नि स्फ
ला ॥ ६१ ॥ निर्वै वि के र्गु नि को चा क र्गु र्गो गि ले मे थै ना नु र्गु नि वा रो गि ये सा प्रा ल
गा ल्पा ई वे द पा ठ ग रा उ नु यो स वै य र्थ हो ॥ ६१ ॥ व र य त्कु ल जा प्रा न्नो वि रू पा म पि क
न्य का म् ॥ रूप व ती न ती च स्ते वै वा ह्यं स द त्ति कु ले ॥ ६२ ॥ रा मि छ ता प ति ता नि बु द्वि
मा ले भ कु लि कि क न्या वि वा ह न ग र्गु म रा मि भ या प ति कु लि न्द्रा नि वि वा ह ग र्गु ॥ ६२
॥ वि शा द प्य मृ तं ग्रा ह्य वा ला द पि शु भा सि त म् ॥ ती चा द पि त मं वि द्या सि र त्रे दु
कु ला द पि ॥ ६३ ॥ नि ति का क रा सि र त्र भ कु लि न्द्रै भ या प ति को हि का ला वि ष का य डी
मा न मृ त नि सि न्द्र भ मृ त नि वि ष दो ड नु प र्द त्त सौ ग रि लि षा ड नु ॥ ६३ ॥ क स्य दो षं कु

॥ रा म ॥
॥ २० ॥

लेनासिवाविनाकोनपीडित॥केननयनानंप्रापंश्रीयःकस्यनिरतरम्॥६४॥कस्कोकल
मादोषरमहाक्षयरोगमेतदेतंदुःखरुखनपाउत्पाकोद्विलक्ष्मिसर्वैकस्थिर्द्वन॥६४॥
दोषोप्यसिगुरोयसिनिगुरोष्वपिजायते॥सुकुमारस्यपद्मस्यनालंभवतिकर्कषम्
॥६५॥गुरारदोषसर्वेजन्माहन्ध्वरेकन्ध्वोरेकन्ध्वकमल्कानाल्समाबुद्धतुपद्वि॥६५॥
अमृतंशिशिरिवह्निअमृतंपायसभोजनम्॥अमृतंगुरावतीभार्याअमृतंवालभाषितम्॥६
६॥जाडोदनेमायफागुरामेहमाभागोसुखोगुरोस्त्रिअमृतवालस्यकोवोलीरखिसर्वैका
अमृतंरु॥६६॥दुर्लभाप्राकृतिवारीदुर्लभस्तुक्ष्मीप्रभू॥दुर्लभाचसुहृन्नारीदुर्लभंस्वच
नंप्रियम्॥६७॥योग्यरहित्वाकरारिसनभयाकाराहाहिकारिस्त्रीप्रियवचनमेतदुर्लभंद्वपाईन
॥६८॥नदीनांजान्तवीथ्रेहंनारीणांचपतिवृता॥नराणांचनृपंप्राहृदेशानांयत्रतिष्ठति॥६८॥
नदीमागङ्गास्त्रीमापतिवृतामनुष्यमाराजादेशमाभाजन्मभूमिरितिस्वर्गसमांशेधृ

॥ कु. प्रि. वा. ॥
॥ ३१ ॥

॥ ८८ ॥ पुत्रपौत्रसमाकीर्णदासीदाससमाकुलम् ॥ भार्याविरहिनांपुंस्त्र्यायधारणं तथा गृह
म् ॥ ८९ ॥ वीरानातिकमाराकमारीगाईभैसिगोसधंमेतदुष्टस्त्रिक्रमतेतेत्यर्वन्समां हो ॥ ८९ ॥ स
र्वेषांमेवरत्नानांस्त्रीयोत्तमसुत्तमम् ॥ तस्मात्तदर्थं नीचयातालुल्यच्चाधनेन किंप्रयोजनम् ॥ ९० ॥
॥ रत्नकामध्यामास्त्रीमुख्यक्रीडंजवस्तुर्देवठियास्त्रीद्वेनंभनेन्योर्ध्वजैवस्तुकोकेदिप्रयो जैहेत ॥ ९० ॥
कुस्त्रीहनि कुटुम्बानिकुपुत्रोहन्यनेकुलम् ॥ कुसंघीहन्यते राजा राक्षोचोरेराहन्यते ॥ ९१ ॥ य
रियास्त्रीलेदृष्टमित्रकोमुखिद्वोरालेकुल्लोमुखंमंत्रिलेराजाकोचोर्लेतासर्वेकोनाशगर्द ॥ ९१ ॥
स्त्रीणां दोषग्रहस्त्रीणिगुरांस्त्रीणिमहीयते ॥ गृहाचासुतोत्पत्तिस्मरणोपतितासह ॥ ९२ ॥ स्त्रीमा
हज्जार्वेगुत्तृष्टगुराणिहोवठियायगर्तुवोरपाउनुमर्दासतिजानुयोगुराहो ॥ ९२ ॥ वकयकी
नपश्यन्तिकेन्नमक्षयन्निवायसा ॥ प्रमदाकिन्नकुर्वन्तिकिन्नवंचन्तिमध्यमा ॥ ९३ ॥ अडसास्त्र ॥ राम ॥
जालेलेसर्वेविवेकजान्दध्वकुल्लोविगर्देनकागसर्वेथोकरवान्धस्त्रीहसंघात्रालहिमदवा ॥ २१ ॥

लामन्परिवोल्ब ॥७३॥ पुत्रप्रयोजनं भार्यापुत्रापिरांम्ययोजनम् ॥ हीतप्रयोजनं मित्रं सर्वमा
त्मप्रयोजनम् ॥७४॥ स्त्रीकोकावठियाबोरपाउनेदोरालेपिराउपानिदीकुल्कोठकारगने
हितगनेमित्रसर्वेकरोज्झकानिमित्रमाचाहिन्द ॥७५॥ समुद्रावरणभूमिप्राकारावरणागृह
नरेन्द्रावरणादेशाचरित्रावरणास्त्रीय ॥७५॥ समुद्रकोसोभापृथ्वीरबडवानलअग्निथकोव
ठियास्त्रीविगेवाकोफलफुलपर्वालेरजाकोमंत्रिलेदेशलेत्रिकोसभावलेहो ॥७५॥ नग
हानिनवाशानिनप्राकारानरक्षका ॥ नवभुर्नववभुवासुशीलानिकुलस्त्रीया ॥७६॥ वध
कोजकोरक्षठोकापर्वालमेतलेहुदेनदाज्झभाईमेतहुनवठियास्त्रीभयासर्वेक्षाहुन्द
॥७६॥ नदीपातयतेकुलंनारीपातयतेकुलम् ॥ नारीणांचनदीनाञ्चस्वच्छन्दंललिता
गति ॥७७॥ नदीलेनभीकोजमिरनारीलेनगिचोपुससतानिकुल्कोनागगनेहुदान
दिरनारीलेमज्यादानदाउतु ॥७७॥ लतापार्श्वस्थितंवृक्षंभुज्यंपार्श्वस्थितंनृप ॥ पार्श्व

॥ बुद्धिचा ॥
॥ २२ ॥

स्थं पुरुषं यो विदेष्यति न शंखयः ॥ १८ ॥ राजा भयास्त्रिभैः सखभेद्येति तेन गिकका मन्दा जागि
र्यो राजालेन गिचवसिष्ठदागर्न्यालो ग्रे स्वास्तिलेन गिचिको सखलाईलहराले वेद ॥ १८ ॥ नैव पश्य
ति जात्यभो कामाभो नैव पश्यति ॥ न पश्यति मनो नमजो ह्यर्थितो नैव पश्यति ॥ १९ ॥ जमे
को भो भो दिनारे भो भधर्मि भो सधैः की कोरि सगने यति सवैः भवेदु ॥ १९ ॥ जीर्णमंत्र प्रण
यति भार्या च गतयो वनाम् ॥ रणान्यत्यागतश्च शयश्च गृहमागता ॥ २० ॥ पुरानो भै पुरश्चरण
या को मंत्रवाई पचे को भन्तयो वन्के हिद्यटि सुखभावकी स्त्री रणावाट फर्कि घाया को भुरे इमे वे
असल्लु ॥ २० ॥ लक्ष्मिलक्षणा हीने च कुल हीने सरस्वती ॥ अणत्रे रमते नारी गिरो वसति वा
शव ॥ २१ ॥ लक्षणा नभया काठा उकी लक्ष्मि ही कुलिक सरस्वती यटि जात्मा लिभया की स्त्री पर्वता
इन्द्रलेपा न्या को पानिद्र सवैः यर्थ काई ॥ २१ ॥ यस्य भार्या विसपाक्षिक स्मरिकलहप्रिया ॥
उत्तरोत्तरवादि च या जरा न जरा जरा ॥ २२ ॥ जकि स्त्री नरा मिदुपस्थले बोले मा कुरा काटि वो

॥ राम ॥
॥ २२ ॥

लिमधैज गडासाप्यारोगहेतेस्कोपुमयवुढोनमयापनिचाडैनैवुढेहन् ॥ ८२ ॥ यस्य भार्या सु
रपाचमर्तोमनुगामिनी ॥ नित्यं सधूरभात्रिचसश्रीयानश्रीयाश्रीया ॥ ८३ ॥ जस्मिन्नीरासि
पनिदपाहुनाहमकोमान्नर्जितगर्धे मिठोवोल्हेपुमयकोवचमान्हेतेसाकापुमयतेजश्चिह्न
न ॥ ८४ ॥ यस्य भार्या गृहे नित्यं श्रुतिचपरिगर्जितम् ॥ तस्य सिद्धिनिगात्राशिपद्मीनिवहि
मागते ॥ ८५ ॥ जस्मिन्नीलेपुरुकोकराकुर्भुकेमेगर्धेतेस्कोपुमयहिउदमाकमल्लुकेकेहन्
॥ ८६ ॥ यस्य भार्या गृहे नित्यं मानैवहितकारिणि ॥ वर्द्धतेतस्यगात्राशिभुक्तपक्षेयथात्राशि
॥ ८७ ॥ जस्मिन्नीलेखानलाउनसेतगेहकरामाजामोमेहितगर्धेतेस्कोपुमयभुक्तपक्षका
चन्द्रमोमेवढह ॥ ८८ ॥ किं जानैवहमिपुत्रैसोकसत्तापकारके ॥ वरमेकेकुलालमिपुत्र
विश्रामतेकुलम् ॥ ८९ ॥ वावुजामानमानेस्त्रीकावस्मापन्याकोसुखदोराधैरैहनुमन्दावदि
यावुदिसंगैरैभयापनिकुलताये ॥ ९० ॥ येकभार्यात्रयपुत्रावेहलिदशवेनवा ॥ कल्प

कालावशानेपिनतेयास्यनिविक्रियाम् ॥ ८७ ॥ एकलीकोराकोरिहलरदरागाईरनर
चुठावुठिकेराकेटिवाकस्मेतभयाकोधर्विग्रन् ॥ ८८ ॥ सधुव्यावहवपुत्रागयामेकोयदिषु
॥ ८९ ॥ यजेयाभ्रमेधेननीलम्बावृषमुसुजेन ॥ ९० ॥ कोराधर्मयागयागेकसैलेभ्रमेद
॥ ९१ ॥ गलीनीलोसाठेछाडिकसैलेतीर्थगैलाली ॥ ९२ ॥ एकेनभुष्कविसेरादह्यमानेन
वदिना ॥ ९३ ॥ देह्यतेनदनेसर्वकपुत्रेराकुलंतथा ॥ ९४ ॥ कपुत्रयौराजन्योभनेवना
सुकेकोरुषयउराभागागोलाग्रावन्मैनाग्रागन्माडेगर्द ॥ ९५ ॥ एकेनापिसुवि
क्षेरापुष्टितेसुमुगन्विनाम् ॥ ९६ ॥ वासितंतदनेसर्वसुपुत्रेराकुलंतथा ॥ ९७ ॥ जङ्गल्मा
धीरवराउकोवोरयौरालेभर्वत्वालोभाउनेगर्दतसैसुपुत्रयौराभयेकुलसर्वैकोउ
दार्गर्द ॥ ९८ ॥ यस्यपुत्रोवसाभृत्त्याभार्याच्छन्दानुगामिति ॥ ९९ ॥ विभवेस्वपिसुनुष्टः
स्वर्गतस्यमहीयते ॥ १०० ॥ गृहस्ताश्रमास्वास्मिहोरावाकलेरेरंतभनेकोमानेनभने

राम ॥
॥ ३३ ॥

न्योसर्वेविश्वेहो॥५१॥येपुत्रास्तेपितुर्वदयासपीमायेसुपोसिका॥सन्मित्रयस्यविश्वासे
साभार्यायत्रनिवृत्ति॥५२॥आपुत्रलेभनेअरायावमोजिजोस्त्रीपुत्रचल्हंतिन्कोवावुमित्र
दिवठियारितसंगस्तेहगरिरावतुपद्व॥५३॥यस्यजीवतिजीवतिविप्रमित्राणिवाध्ववा॥स
फलंजीवितंतस्यआत्माथेकोनजीवती॥५४॥वावुआमागुसुवासराराइहमित्रवन्मुहको
रक्षागर्न्यापुसुयक्ष्ण्यवादिस्मेतलेवाचेकोमुफलहो॥५५॥सजीवतिगुरायस्ययस्य
धर्मसजीवति॥गुराधर्मविहिनश्चजीवितंतस्यनिष्फलम्॥५६॥विद्यांगुरानितिजा
नेधर्मात्मातेवाचतुहोवेविचारिसुखलेवातेकोमुदीसदिहोवेथद्व॥५७॥वावासरस्व
तियस्यभार्यासुप्रवतीतथा॥लक्ष्मिन्प्रागवतीयस्यसफलंतस्यजीवितम्॥५८॥कोइति
सरस्वतिदेवोलेसुखभावकिस्त्रिधंदानातुसकतुपकारिहनेयेस्तेलेवाचेकोसार्द्ध॥५९॥
धर्मार्थकाममोक्षाराण्यस्यैकोपिनविद्यते॥अजागरन्तरसोपिनिर्र्थंतस्यजीवितम्॥

॥ बुद्धिवा ॥
॥ ३४ ॥

॥ ९६ ॥ धर्ममर्थकाममोक्षस्मेतवार्पदार्थकोयादनगरिभजिगर्भमैसुतिरहतेलेमर्तु
वेसद्य ॥ ९६ ॥ धर्मशास्त्रविहितस्यदिनंयातिचविक्रिया ॥ सहलोहकारवस्तस्यस्वयंच
वप्रजीयते ॥ ९७ ॥ सत्यधर्मउपकारनगर्भमर्ककोनिन्दागरिदिनितानुतेलाईफलाको
भाडामालागेकोखियासहवाचेकोभनु ॥ ९७ ॥ शत्रोरपिगुरोवाच्यादोषोवाच्या
गुरोरपि ॥ युक्तायुक्तवेचोवाह्यंनवाच्यागुरुगौरवम् ॥ ९८ ॥ नितिकोकरागुरुकोवाश
पुढजापतिगर्तुवेनितिगन्यागुरुभनितउराउनुनितिनडाडनु ॥ ९८ ॥ लोळपुच्छति
मेवार्ताशरीरेकशालंतव ॥ कुतःकुशलमस्माकमायुर्यनिदिनेदिने ॥ ९९ ॥ इष्टमि
त्रहंससगभेटहुदाआरान्दभन्दभनित्यचोलाकोदिन्कादिंमायुघटेकोजान्देनत ॥ ९९ ॥
अकर्तव्यंनकर्तव्यंप्रारोकरोठगतैरपि ॥ कर्तव्यमेककर्तव्यंप्रारोकरोठगतैरपि
॥ १०० ॥ प्राराजान्दभनेपनिअकर्तव्यंनगर्तुनितिकाकराणर्दप्राराजान्दभनेपनि

॥ राम ॥
॥ ३४ ॥

नितिनवाडनुवतुजांदिनु ॥१००॥ विलोपादनामलिकागुरावतिमध्यचक्रांदिप्रशि ॥ नाभौ वा
रवतिवदनिहृदयेमायापरियोजिनः ॥१०१॥ सावदिपसातसमुद्रमयाकावारिलेजायाकोसरस्व
तिवसेकाजिधालेअसतनवोलसत्त्वोल्दाजान्दभन्याअनित्यचोलात्यागगर ॥१०१॥ गिवांमु
लउदाहरतिमथुरानावायवारागशि ॥ येतदुत्तमपदं वदनिमुनयोयोध्यापुरीमस्तके ॥१०२॥
॥ ब्रह्मज्ञानिलेसापुरीचौद्रभुवंअष्टपर्वत्सवैआफ्रेतारिर्मादेरेको नैकसैवअत्माप्रतिअसत्
गर्देननकर्तृकाडसोधर्मगर ॥१०२॥ तत्सत्श्रीचानकेसारसद्बुद्धेद्वितीयशरुम ॥२॥
कालेचरिप्रगात्रयचिकालेचमित्रविग्रह ॥ कार्यकारणमाश्रीत्यकालक्षयतिपरिडित ॥१॥
ज्ञानिजन्मेकालवेलावरवहेरिद्रावसंगमिलापमित्रसंगजडास्मेतगर्नुपद्व ॥१॥ कालप्र
चतिभूतानिकालसहरतेप्रजा ॥ कालसुप्रेसुजागर्तिकालोहिदुरतिक्रम ॥२॥ प्राणिह
रुत्वाइकालेपकाउनेरहरास्मेतगर्दआफ्रुतिदायापतिकालतारातदिजागैद्व ॥२॥ का

॥ बुद्धिचा ॥
॥ ३५ ॥

लात्परोहतेवीजंफलं कालात्प्रवर्द्धते ॥ कालात्प्रवर्द्धते सृष्टिपुनः कालो हि संहरेत् ॥ ३॥ वी
जद्वर्तेपकाउनेसृष्टिस्थितिसंहारं तत्कालैकाग्रधिना द्वसोसैवेकाले गच्छेत् ॥ ३॥ रम्बदिशो
भूमिरापचन्द्राकोनलमाकृत ॥ सर्वसंहरते काले तस्या कालमहत्तर ॥ ४॥ प्रचमदाभूत
स्मेतकालकावन्मादुदाकालहुलोद ॥ ४॥ किंकरिष्यति वक्त्राच्च श्रोत्राय च न विद्यते ॥ नग्न
क्षपनकृत्वा मेरुजकं किंकरिष्यति ॥ ५॥ सुन्या नभयाठाठमापेरिडकोरनागाहसवस्या
कागाठमाधोविकोकेका न्द ॥ ५॥ कदलिवनमध्यस्थो वह्निमदपराक्रम ॥ अविवेकी
जनस्थाने गुरावा किंकरिष्यति ॥ ६॥ केराकावन्मासानो भग्नि कोरदुर्जन्तसे काठाठमास
नजैयेककोके जोर्चल ॥ ६॥ प्रलये भिन्नसर्ज्यादा भवति किल सागरा ॥ सागरा भेदमि
च्छन्ति प्रलये पिनसाधव ॥ ७॥ समुद्रकोरसाधुकोरैस्वभावहो प्रलयकाला समुद्रलेम
र्ज्यादाछोडिजलाभयगच्छन्साधुकोमर्ज्यादाकैहैजान्ता ॥ ७॥ तेन शरितकल्यानेम

॥ राम ॥
॥ २५ ॥

मर्ज्यादंसागरस्य च ॥ प्रतिपन्महासन्धानचरान्निर्कदाचन ॥ ८ ॥ वरुसुमेसपर्वतच
ल्दईमाहाप्रसवहृत्कनैभवसासापनिस्थिरैर्द्वैचैवत्वेन ॥ ८ ॥ विद्यतेविषुवा
पल्येविद्यतेब्राह्मणानप ॥ पारुष्यविद्यतेनीचेदयासाधुषुविद्यते ॥ ९ ॥ दुर्जनहृत्
ईनिचारत्रीमाचनचलताब्राह्मणानपस्विसाधुदयावान्ऊन्द ॥ ९ ॥ साधुसज्जममात्रेणाम्
वनिदेहविक्रयं ॥ १० ॥ प्रकारंतेनापिदुर्जनकेनगृह्यते ॥ १० ॥ दुर्जन्नाईवरावर्गुणादी
पनिआप्नोतुनमोमर्ष्यासाधुमार्द्धहात्मात्रजोदीसाधुहृत्त्रिर्दित्त्वंनृदधिश्रुयितेइन्द्र
त्नाईज्यान्दिशेथे ॥ १० ॥ बुधबोधानिश्रास्त्रागोनाबुधशास्त्रबोधयत् ॥ प्रत्यक्षेचक्र
तेदिपेचक्षुर्दिनोनपश्यति ॥ ११ ॥ ज्ञानिजंजलैरिसायापनिशास्त्रलेवुम्वंमुखलेवुम्वं
रकानालेदेखतयेकैहो ॥ ११ ॥ नारिकेलसमाकाराद्वयनेकेपिसज्जना ॥ अन्येपि
वदराकारावहिरेवमनोरमा ॥ १२ ॥ राज्ञन्वाहिरनरिवत्सद्रसोभित्रनरंमुखवयरजेव
हिरमीत्रकरोताईइत् ॥ १२ ॥ चन्दनंशीतलचन्द्रचन्दनेनतुचन्द्रमा ॥ चन्द्रचन्द्रनयो

॥ बुद्धिवा ॥
॥ २६ ॥

मिथे साधुसम्यक् शीतल ॥ १३ ॥ साधुसाधु हस्तजामाभयाकाठा उमावसा इत्का तेजले श्रीरवराडर
चन्द्रमासमांशितल हन्दुर्जले अग्निसिद्धो सरिपोल न्याव चंदोल्ह ॥ १३ ॥ अधमाधनमि
च्छनिप्रितिमिच्छ निमध्यमा ॥ उन्नमामानमिच्छ निशानिमिच्छ निशाधव ॥ १४ ॥ अधमि
लेधको मध्यलेप्रितिको उन्नमलेमान्कोशाध हस्तजानिको इच्छागर्ध ॥ १४ ॥ मच्छि काष
रामिच्छ निरुपमिच्छ निपार्थिव ॥ नीचाकलह मिच्छ निशानिमिच्छ निमाधव ॥ १५ ॥ मि
गालेया उकोरा जाले अरुसुलुको रगलु चाले जगडा को साधु जतिलेशानिको इच्छागर्ध
॥ १५ ॥ इतराचार्य मिच्छ निरुपमिच्छ निदारिका ॥ जातय कुलमिच्छ निस्वर्गमिच्छ
नितापसा ॥ १६ ॥ मानिष हस्तको श्रीरात्रा उरुबको तानि हस्तकुलफ हा उना को साधु हस्त
स्वर्गको इच्छागर्ध ॥ १६ ॥ अतिश्ले शोनय द्रव्य अतिलोभेनय सुखम् ॥ परपीडा
चया बुद्धिरैव साधु सुखते ॥ १७ ॥ अतिकल्प लेधं लुप्या उनुतोभले सुखगर्तु मकोला

॥ राम ॥
॥ २६ ॥

इउःखदिआ प्रोवृत्तिचलाउतुत्तिकांसाधुहसगर्देनैसवैकोमलोचिनाउदत्त॥१७॥अ
सकंनारभेप्राज्ञकाय्यैवकारयेत्॥स्वल्पकाय्यैवकुर्याच्चनिष्फलंनैवसेवयेत्॥१८॥
॥आफलेनसकनेकां हिन्यतिइनेसानुकांनिष्फलइनेसेवासाधुहसयोगर्देनत्त॥१९॥
लेदोलेनमाशिकांमौक्तिकमृजजेगजे॥साधवोनहि सर्वत्रचन्दनंनवनेवने॥२०॥स
र्वपर्वत्तामगिरगजमेतिनिसर्वेहानिमाइत्यसर्वेजगामासाधुःसर्ववन्माश्रीखराडइत्य॥
२१॥परकाय्यैषुयुक्तिश्चास्वकाय्यैश्चिप्रग्राहये॥सुहृत्काय्यैषुनिर्वृत्तिराजकाय्यैषुविक्र
म॥२०॥अर्काकोकांजुक्तिलेगर्तुमाफ्रोचडोगर्तुमित्रकोतत्पत्न्येगर्तुमाकोकांपराङ्मुलेगर्तु
॥२०॥जलेलेखेमतिचानांयत्कृतंनभद्वयेत्॥अचलमपिसाधुतांशिलात्लेखिवतिष्ठति
॥२१॥निचोलेगर्त्याकांप्रानिमात्लेखेत्साधुकोकामत्थमात्लेखेत्कैकैहेनविग्रहेगर्दत्त
॥२१॥महतामापदसन्निमहतामेवसम्पद॥इतरेषुमनुष्येषुनापदोर्नैवसम्पद॥२२॥

॥ अङ्गिका ॥
॥ ३७ ॥

वडा भाद्रि त्ना ई आ प त्वि प त्नु लो प छे दो रा वो रा त्ना दू प्र दे न ॥ २२ ॥ वा म्भु तु ह नि विल्व
के त व त्त्रो धे रा च न्द्र मा ॥ विष्णु स्म र्णा मा त्रे रा म दानं क र स म्पु रे ॥ २३ ॥ विल्व प्र च र्ज क
प्र च च ठा उ दा थि स हा दे व से तो व त्त्र ले च न्द्र मा सु ति ग दा श्री विष्णु हा त्मा त्रे जो दि न त्र
ता ह दे मा मा नु भा व ह स रु स रु न्द्र त् ॥ २४ ॥ लेख क पाठ क थै व ये चान्ने रा स्त्र विज्ञ क
॥ सर्वे वे रा नि सो म्प्रु ढाः कृ या व त्र श्च प्र णि टि ता ॥ २४ ॥ लेख व नु लेखा उ नु प ढ नु प ढा उ न
पा ठ ग नु ग रा उ नु यो स त ज न्मं डि को का म्ठ गी छ लि टा र न्या दु र्ज न्को का हो ॥ २४ ॥ वा र्णि
ज्य म श्व वा र्णि ज्य रा ज से वा त प्रो व न त् ॥ धी रा च च्चारि क र्व नि का त रा क थि वा ह का ॥ २५ ॥
यो डा को वे पा र रा जा को से वा उ त्त म ले ग छे न्नी चा ले रा गा वो का वे पा र म धी रे ति ग ई त् ॥ २
५ ॥ व ज्रे ध ना थि वा र्णि ज्य वि द्या थि च व रु श्रु त म् ॥ अ नु का ल स म न्या थि मा ना थि नु प
सि म्बु जे त् ॥ २६ ॥ वे पा ले र्ध प रि त्त ग वि द्या स्त्री म द्ग स न्ना त रा जा म द्ग मा न्या ई न्द्र ॥ २६ ॥

॥ रा म ॥
॥ ३७ ॥

सुखं सप्रदत्ताकारं वाचा चन्दनश्रीतलम् ॥ हृदये कुरु संयुक्तं विधे भूर्जलक्षणात् ॥ ३१ ॥
मिथोकमत्वा श्रीखराउ समान्त्वोतिवोत्तने हृदयमाविशमयाकोठगो ॥ ३२ ॥ दुर्जनस्यि
यवादिचविश्वासो नैव कारयत् ॥ मधुसर्पतिजिह्वाग्रे हृदिहालाहलं विषम् ॥ ३३ ॥ दु
र्जनो विश्वासनगर्नुजिभ्रामाभ्रमृतादिन्माभिन्नकालकुरु विषहन्वनाग्रागर्ध ॥ ३४ ॥ खर
सर्षपमात्राणि परदिद्राणि दृश्यते ॥ सासनो विलम्बात्राणि प्रश्यन्मपिनप्रश्यति ॥ ३५ ॥
रायोसर्पिष्ठप्रमाराकाजर्काकोचुकदेखिनेवेल्कादानाजत्रोभाक्रोचुकपतिदुर्जनदेख
तेनम् ॥ ३६ ॥ दशनीयाश्च ये मूर्खान् नवनश्च निर्गुरा ॥ दूरस्यापि हि दृश्यते किं सुका
इव दृश्यते ॥ ३७ ॥ धनीवाकलिभयापनिनुरूपतासकोफलमैरात्रोहतपतिवालोभाउत्त ॥ ३८ ॥
॥ सुखोपि परिहरत्यज्यप्रत्यक्षोद्विषदपम् ॥ भिद्यते वाक्यशाल्येन भ्रष्टकरारको यथा ॥ ३९ ॥
॥ सुखं भवेत्तसिंपुद्धनं भयेको दुर्दृष्टे पशुहोवोतिवाराभैरकर्तव्यकादासहगर्धनेका

॥ श्रद्धा ॥
॥ ३२ ॥

नगिचभर्तखनजानु ॥ ३१ ॥ सर्पकुरकुरसर्पकुररताखर ॥ मत्रौअधिवशसर्पखरके
नोपशान्यति ॥ ३२ ॥ सुर्यसर्पयेकेहोतसर्पकोविषमंत्रलेजान्दसुखकोविषकेहिले
जान्तसअर्थसुखिलाईताकेवाटनमस्कारगुरु ॥ ३३ ॥ हस्तिहस्तसहस्रराशतहलेन
वाजिन ॥ ३४ ॥ श्रद्धिनोदशहलेनदेवात्यागेनदुर्जन ॥ ३५ ॥ हज्राहीतुहानिदेविमयहा
तयोडादेविअसिंभयाकादेविदशहानतमरुभयाकेहिगर्देतुर्जभोभनेदेवात्याग
प्रेषादे ॥ ३६ ॥ हस्तिनोडुसहलेनकशाहलेनवाजिन ॥ ३७ ॥ श्रद्धिलगुडहलेनखड्डहले
नदुर्जना ॥ ३८ ॥ अङ्गुलेहानिरकोहालेयोडातठिलेगाईभेसिदुर्जन्ताईखड्डनभेभाग
पदेन ॥ ३९ ॥ दुर्जनपपिहर्तव्यशास्त्रेणालंछुतोपिशान् ॥ मरिनाभ्रधितसर्पकिमसौनभ
यकुर ॥ ४० ॥ शास्त्रेजानेपनिअङ्गुलिंसुखिरमरिभयापनिसर्पसंजनगर्ज ॥ ४१ ॥ पात्रापा
त्रविशेषेरावेनुपन्नगयार्थथा ॥ नृणानिअवतेक्षिरक्षीरानिअवतेविषम् ॥ ४२ ॥ गाईके

॥ राम ॥
॥ ३६ ॥

रसपेकोसतन-कोरुर्जकोरुकेहोपासदिदादुदभाउनेगाईसाउददिदाविसभाउ
नेसपमाशिदिदाहातनभाउनेदुर्जनहातजोडोतानेसतजनहेरकतिफरकरहेव॥३२॥
॥३३॥ शुद्धात्रुमितिज्ञात्वातोपेक्षेतकदावन॥ कालेदुर्जनमायातेसुरास्थवहिवीजवत्
॥३४॥ रात्रुभोरनामयेभाईभोपानिभोअग्निभोईन्नाईसानुभतिहेपेनाशागदत्त॥३५॥
षष्टिकेकरकेदोआभसितिश्मश्रुपिङ्गले॥ शतकाडेचळोडेचक्रजस्मानंतविद्येत॥३६॥
॥३७॥ डेरो६०केलोचुघेरकातुवारवोरशो१००कुकमिसंगअननदोषचद्रनिहत्संजनगनु॥३८॥
॥३९॥ स्थानभ्रष्टेदुराचारेनिष्टोहातिपरित्यजेत्॥ विश्वाससमयेकार्येविनाशासुपगच्छति
॥४०॥ परैवतसत्तांनमयाकाररुनिहत्सुकीकोरिसगर्भेनृन्विश्वासगयोकाविज्यो॥४१॥
मृडनैवमृडहनिमृडनाहनिदारुणम्॥ नासाधमृडनाकिञ्चिन्नस्यानाशांतरोम
दु॥४२॥ मसिनोबोलिरुडिलोकांगनेधरनबोलनेयस्देखिउराउनुसर्वनासगद॥४३॥

॥ बुद्धिचा ॥
॥ २५ ॥

वने प्रज्वलितो वह्निर्देहन्मूलानिरक्षति ॥ समूलमुत्पुलपतिचापो घामृदुशीतल
॥ ४१ ॥ वन्मात्रागोलागदातरवकोजरोमरहन्त्यनदिलेवगाउदारकपटिहसलेनाशदा
जरोस्मेतउरवाड ॥ ४१ ॥ स्थूलरोमावलिर्वर्द्धकन्याचवद्भाषिणी ॥ दुष्पराशिकृत
कृमियेनेषां परिवर्जयेत् ॥ ४२ ॥ तुलोपेटलामोर्ध्वमयाकोकोरुगाउडलिर्वर्द्धरागन्या
स्त्रीष्टितनपुगेरकिरोलाप्याध्वतयेतिन्यागुनराखनु ॥ ४२ ॥ रहस्यमेदयेसुन्यं
प्रदोषानुकीर्तनम् ॥ कलहप्रकृतिश्चैवदूरतःपरिवर्जयेत् ॥ ४३ ॥ गुप्तकुरोप्रकाशगते
चुकलिलगाउतेवेसमुदादिमाहायेसाकोकैहेसंज्ञनगर्ज ॥ ४३ ॥ मन्त्रमुक्तेगजोन्मत्तंगाव
धैवप्रसूतिका ॥ अथयानपुरोदासिदूरतपरिवर्जयेत् ॥ ४४ ॥ धैरैरवानेयोडासधैनाम्कुर
रहतेहानिमुक्तेरिगाईपरस्त्रीवाराजाकासुसारेयेतिलाईनाकेवाटयाडुयेसाकान
गिचजादाविग्रिन्द ॥ ४४ ॥ दुर्जनंचमदामित्रंम्यत्वामिश्रतास्त्रियः ॥ गोजीरोवस्तुजी

॥ राम ॥
॥ २५ ॥

गी च दूरतपरिवर्जयेत् ॥ ४५ ॥ उजैमित्रभक्तो मद्रहासखात्तान्मस्त्रीकुठिगाईपुरा नो क
पडायेति परे द्वाडनु ॥ ४५ ॥ न विश्वासो दमित्रस्य मित्रस्यापि न विश्वयेत् ॥ कदाचित्कुपितो
मित्रसर्वगुह्यं प्रकाशयेत् ॥ ४६ ॥ शत्रुसंगरमित्रकामित्रसंगविश्वासनगते मित्रे सायाधो
कापद्य ॥ ४६ ॥ न विश्वरो दविश्वाशो भविश्वास्य भविष्येत् ॥ विश्वासाद्भयमुत्पन्नं प्रलान्य
पि नित्यं नृति ॥ ४७ ॥ न दीनखालु जलुदाहा मिभया का जलुस्त्री राजा कामा निसद्वजन विश्वा
सिद्धिं दाने हस्तसंज्ञ विश्वासनगते ॥ ४७ ॥ नदिनां च न विना न्वशृङ्गी नां रात्रिपाशिताम् ॥
विश्वासं नैव कर्तव्यं स्त्रीपुत्राजकुलेषु च ॥ ४८ ॥ दुष्टजं वेदमानि न दी आगो म दवात्मानं
सिद्धं दानं भया का जलुराजा का कुलद्वामना दैनम् ॥ ४८ ॥ नदीतिरेषु ये वृक्षा या च ना
री निराश्रया ॥ सा मंद्गिरिहिनो राजान भवन्ति चिरायुषा ॥ ४९ ॥ नदि का तिर्को मरुव आधानं
भया कीर्त्ति मवित्तमया को राजा आगा कान गिच को पि उद्वनिका दोटो आयुः कृत्य ॥ ४९ ॥

॥ बुद्धिना ॥
॥ ३५ ॥

यदि चेच्छा स्वतंत्रि विविशित तत्र न कारयत् ॥ युतमर्थप्रयोगं च परोक्षे दारदर्शनम् ॥
५० ॥ वाचुं ज्याल्यस्मरक नाशप्रितिराव न्या मानि ससङ्ग लिङ्गि कारवारन गर्तु जुवान रवे
लनु तेला किती संगन चाहिन्या कुरा न गर्तु ॥ ५० ॥ न गच्छे दुष्ट विश्वासं न कुर्यादल्प
विग्रहम् ॥ आत्मानोपितथा क्रोधं मित्रं वैरिनं कारयत् ॥ ५१ ॥ दुष्टसंज्ञ विश्वासन गर्तु द
लगरिदगडा न गर्तु मित्रसंगवैरत्वरि सक सै सङ्ग न गर्तु ॥ ५१ ॥ कुतयं मत्रिग जानां विप्र
अनुबलिपति ॥ प्रवृजितं व्रतं भूषममेव निसदा बुधैः ॥ ५२ ॥ कुयत लिङ्गन्यायग न्या राजा
मं विदे स्या राव न्या ब्राह्मण भूषमया को संन्यासि येति को संवान गर्तु ॥ ५२ ॥ कुसंज्ञो नास्ति वि
श्वासं कुभार्या या कुतो रति ॥ कुराज्ये नास्ति निवृत्ति कुदेवो नास्ति जीवितम् ॥ ५३ ॥ कुमविम
कु विश्वासवै न कुत्ति संगरति कुल कुराज्य मावुत्ति कुल कुदेवो नाव लुकेन ॥ ५३ ॥ नास्ति सत्यं
सदा चोरेना सो चैव बलिपति ॥ मय मे सुहृद नास्ति यूत काले वयं न हि ॥ ५४ ॥ चोरो सत्य

॥ राम ॥
॥ ३० ॥

रकुसजिः ब्राह्मणमाशुचिरुन्नमदवालाकोइहजुनजुवाडिसंगतिनेथोकऊन ॥५४॥
द्वौविप्रौविप्रमग्निचदस्यत्योगु रुद्रिष्ययो ॥ भननरंनैवगनव्यंहरस्यवृषभस्यच ॥५५॥
नग्निब्राह्मणगुरुद्रिष्यदस्यतिमहादेवसाठेस्मेतइतिहमकामाश्रवाटनहिउनु ॥५५॥ क
कस्यहेतुः रवस्यकस्यहेतुः सुरस्यवा ॥ सो पूर्वकनकस्यैवकारणं सुरवदुःखयो ॥५६॥ कस
नेदिकलेः रवपाठकलेगर्दसुःखहोलाभाकलेऽपि ॥ लाजतमागन्याकोकालेदुःखसुरवदुःख
हो ॥५६॥ दुःखस्यसुःखस्यनकोपिदाताप्ररोदधानिति कुबुद्धिरेवा ॥ अहम्करोमिति वृथामि
मातस्यकर्मसुत्रंगतितोहिलोके ॥५७॥ दुःखकोरसुखस्मेत्कोदाताकोहिप्रतिद्वेनदिनुह
प्रतिद्वेनमैलेगन्याकोकांभन्याअहंकारमात्रहोर्नगराठतेईश्वरेऊन ॥५७॥ लोकयात्रा
भयलज्जादक्षिणायान्यागशिलता ॥ पञ्चयत्रनविद्यतेनकुर्यान्वसंहतिं ॥५८॥ चक्र
पूजानभयाकोयत्राडर्मलाजस्मेनभयाकोदेवाधर्मलेरहित्याचैकरानभयानवल ॥५८॥

॥ उद्दिष्टा ॥
॥ २१ ॥

नाञ्जनं शुक्लं तां याति न वे कल्पवटु श्रुतम् ॥ न नारी स्थिर बुद्धिस्त्यागूर्वसंस्कृतम्वदेत्
॥ ५५ ॥ से तो गा जल रशा त्रिक पटि रुत स्वास्तिको निक्षालुद्धि रुत म्दर्वसंस्कृतम्वो
ल्ले त ॥ ५६ ॥ अरुण ये सो ग्नि शो घं व्या धि शो घं स्त थै व च ॥ व्यु न र्वर्द्ध य ते य स्मा त्त स्या शो घं
न कार य त् ॥ ५७ ॥ अरुण भो रोग भो अग्नि भो सानो रथो रै व भ नि हे ला ग रि रा खे व डे र जा ठ
ढ न रा ख नु ॥ ५८ ॥ उद्दे गः कल ह कं रा ड यु त म द्यं प र शी य ॥ प रि हा स्य गुरु स्था ने य त्त म
प रि वर्ज ये त् ॥ ५९ ॥ अर्का का व न्त्री को रि स च क लि गुरु ब्रा ह्म रा सा धु को नि न्द्रा क हि हे न ग
नु ॥ ६० ॥ प र शो का का र्म्य ह नारं प्र त्य क्ष प्रिय वा दि न म् ॥ वर्ज य त्ता द शं मि त्रं वि श्र कु म्भ म्भ
यो मुख म् ॥ ६१ ॥ अगा डि स रा उ न्द्रा प द्वा डि नि न्द्रा रे व दोग न्द्रा सा ह्म स रा उ न्द्रा ये स्ता ला ई
वि श्र को य य का मुख मा को डु द जा नि न्द्रा यु ॥ ६२ ॥ कु दे शं च कु वृ त्ति भ्र कु भा र्ग्य कु न
री स्त था ॥ कु भो ज्यं च कु द र्भ्यं च वर्ज य त्प रि उ त्त स दा ॥ ६३ ॥ कु दे श कु वृ त्ति कु त्ति कु

॥ राम ॥
॥ २१ ॥

स्त्रीकु नदीकुद्रव्यकुमलज्ञानीजंलेमोछाडनु॥६३॥उर्वशीयदिसुपेरा२भायदि
निलोत्तमा॥गोपालिनिकाचेववर्जनिपाप२स्त्रीयः॥६४॥उर्वसिरम्भानिलोत्तमा
गोपालिमेनिकाजसारावार्धतपतिपरस्त्रिहसजामोर्गनु॥६४॥भक्ताभक्तस
मंपक्षेत्कार्योकार्येचतुल्यता॥सदाकार्योमुसन्देहाभेतव्यसर्वदावुधैः॥६५॥यो
भक्त्योत्तमधर्मिप्रापिकोविवेकनगन्यासकैजुवासीजम्भल्लाभासकुरुन्यायेस्ताको
कहेपतिमङ्गनगनु॥६५॥भेदव्यंमकुलितानोराजापारोपजीविनाम्॥भेतव्यज्ञा
नशत्रूणांकचाप्रवीपकारिणाम्॥६६॥अकुलीसुखराजाभागेपानिशत्रुदाज्यभा
ईयेति॥अनाकोकहित्येसङ्गनगनु॥६६॥पादपानोभयंवातःपद्मानोशिशिरो
भयम्॥पर्वतानांभयंवज्रोजनुनाम्निपदोभयम्॥६७॥रखलाईवतासकम
ल्लाडनुसारोपर्वत्ताईवज्रजनुलाईमानिस्तरुकोडहेन्द॥६७॥मातायदिवि

॥ उक्ति ॥
॥ ३३ ॥

बंद्यापिताविक्रियते श्रुतम् ॥ राजा करोति चान्याने को मे वाता भविष्यति ॥ ६८ ॥
पौत्रं तज्जगदादिनामा विषया उने सो ते निगुवे चने होला निति न जान्या राजाले वे कसु
मो डे उग या जे सकले रक्षा गता ॥ ६९ ॥ यत्र राजा स्वयं चोरो मंत्रि सपुरोहित ॥ तत्राह
किं करि स्यामि यत्तोरक्षा गतो भयम् ॥ ७० ॥ गुप्तप्रोहित मंत्रि सहित राजा चोह भते के
ले रक्षा होला जाहार रक्षा भोता हि भयपति रुन्द ॥ ७१ ॥ विधाता लिखिता यमान
ला राक्षर मालिका ॥ देवो पितृ हि संक्रोति संलिरव्यति रितं मृतः ॥ ७२ ॥ देविका
दिनामा विलेले रेवे को जति देव साहाय भयापति मे टिऊन गन सक ते ननु ॥ ७३ ॥ उ
दयति भातो प्रश्नि मे दिग्विभागे प्रचरति यदि मे रुद्र शित तां याति वाहि ॥ दिगम
नियदि प्रप्रवेता ग्रे शिला यां न हि चरति न रागां म्वा विनी कर्म रेखा ॥ ७४ ॥
वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ७५ ॥

॥ राम ॥
॥ ३३ ॥

दुष्कामाधिकमल्लुलाभाविलेलेखेकोतिल्लडुगैत ॥७१॥ कर्मसिद्धिप्रधानानि
वुद्धिनामित्ययोजनम् ॥ पाषाणस्यकुतोवुद्धितेनदेवोभविष्यति ॥७२॥ बुद्धिभ
न्दाकर्मवृत्तेऽहन्कोहिदुष्कादेवतारकोहिचर्षिमाकोहिदुदभात्माकर्मलेगदीतेस
तोगरायोसत्तारकर्मवनाउकर्मभनेकोपूर्वजन्तकोसतभसहो ॥७३॥ कर्मरायपि
प्रधानानिसन्निकृष्टशुभेग्रहे ॥ वसिष्ठदत्तलग्नेपिजानकीदुःखभागिन ॥७३॥
वसिष्ठजन्ताऋषिलेचिह्नालेखेकोकंदो कर्मलेगदीसितारामलक्ष्मराहसवन्माज
ईतानातदुकोदुःखभोगुप्रयो ॥७४॥ शानुकुलेभवेत्तस्मिंदोषोपिगुणसम्पदि ॥
गुणापिदोषतांयातिवक्तिभूतेविधातरि ॥७४॥ धनिदभनेमानाकुल्लोवामुर्वपा
पिदनापतिसवैमानाहन्नेसालेजेवोलेपनिसकादेदनुकंगान्दविद्याकुली
कोहातपनिनितिबोल्पोतपनिकसेलेभादर्गदेनदुलोकाधनुलाह ॥७४॥

॥ बुद्धिचा ॥
॥ ३३ ॥

किं करोति नरप्राज्ञप्रेक्षमास स्वकर्मरास ॥ प्रायेण हि मनुष्याणां बुद्धिर्कर्मो न सारिणि
स ॥ ७५ ॥ मानि सहस्रमध्ये परितः ज्ञानि दत्तपतिबुद्धिजसौ कर्मसो हि जनु सा कौतुहल ॥ ७५ ॥
॥ समस्तसहस्रवित्तं भवेदुत्पन्नकोमलम् ॥ आपत्सु च महान्नो लशिलालंघ्या न कर्तुम
स ॥ ७६ ॥ वडा मिले कमलमैतरे चित्तवधत्मा दुःखप्रतिगर्तुं यद्व ॥ ७६ ॥ हस्तस्य भूष
णादानं स्वयं कण्ठस्य भूषणम् ॥ अलच भूषणं कर्मा भूषणं किं प्रयोजनम् ॥ ७७ ॥ हा
तदां नाने जिभोसा चो वोलने कथा रसकुरो सुने कान् हृदयतो निमै गर्तुं गोडा ही डिमी थ
जात्या जारवा को पाठ गर्तुं दर्शित स्मै गर्त्या गह नावने कां ईत् ॥ ७७ ॥ चरि सं भूषणं स्त्रीणां
दुसाणां पुष्य भूषणम् ॥ स्ववृत्ति भूषणं पुंसां यतिनां भूषणं कृया ॥ ७८ ॥ स्त्री को मत चरि
त्रवो रको फल फल नु पुंसां को स्वधर्म सार हनु योगिने कृया गर्तुं राजाले प्रजापालन नु यो
सम्भर्मिही ॥ ७८ ॥ नक्षत्र भूषणं चन्द्रा नारीणां भूषणं पति ॥ पृथिवी भूषणं राजा श्री

॥ राम ॥
॥ ३३ ॥

लं सर्वत्र भूषणम् ॥ ७९ ॥ दिव्योत्सव्यो वन्द्यो मातृको पुरुष पृथ्वीको राजा सम्यक्
को गहनाशीलत्वभावहो ॥ ७९ ॥ करोतु पुष्पकटिस्तु वंज्यादन्नधावनम् ॥ मेकहस्तप्र
णामेन हनिपुण्यं पुराकृतम् ॥ ८० ॥ कान्ताफललाठुनाले भोचोर्जोलाते दानमात्र
नुभोजनमर्माधागोवाधनुभोरु कहाले नात्र ठो क दिदा मृदिल्लायो निमागया का पु
ण्यको नाशगर्ह ॥ ८० ॥ महतापरिभवश्रेण नीचामानमुत्तमम् ॥ कंसारिपादघातेन
कालियस्य विभूषणम् ॥ ८१ ॥ दुलाले जपमांगयो जसत्मानाले मांगयो कन्मलहेरक
लकोपा उपदीकालिनागतयो ॥ ८१ ॥ भूची भूमिगतो तोयं भुविर्नारीपतिव्रता ॥ भूचीक्ष
मा करो राजा संतो सवाह्वरा भूची ॥ ८२ ॥ भूमिको जल्पतिव्रता स्त्री समावन्न राजा संतो मि
त्राह्वरा सूर्यकाकिरराको भूमियति शुद्धन ॥ ८२ ॥ भस्मना भुङ्क्ते कांशनाम्रमन्त्रेन
शुद्धति ॥ रजसा भुङ्क्ते नारी नदीवेगेन शुद्धते ॥ खरानिले काशो ममिलाले तोमो रजमे

लंगान्याकीलीनदीवेगलेभुद्रुन्दन॥८२॥पितुरत्तपुंरदयात्मानुर्दयात्महानसमं॥गोरु
 आत्मसमंदयास्वयमेवकृषिंभुजेत्॥८३॥बाबुलेज्जपुंरदामालेमन्सागार्दलेभाप्रसमं
 दिन्दीभाप्रलेज्जतन्संगधंरेतकमाउतुपदं॥८४॥कपिलाक्षीरणानेनब्राह्मणीगम
 नेनच॥वेदाक्षरविचारेशासमुद्रोत्तरकंभुजेत्॥८५॥कैलिगार्दपालनेडुदवातेब्रा
 ह्मणिसंगगमंगन्यावेदपठन्यात्पोसुद्रनरकपदं॥८६॥इरुघृणीत्वसन्नुहकोधनो
 नित्यसद्धीत॥प्रभाज्योप्रजीविचषडनेडुखभागिन॥८७॥दयाधरंसर्जनमैसर्वेजकीको
 सम्यतिदेखिनामगसुभनियोढकाचिन्तागिरिगतैडुखिहो॥८८॥शुद्रहस्तेनयोभुङ्क्तेमा
 समेकंनिरत्नकम्॥जीवमानेद्वेचुद्रामृतस्नानञ्चजायते॥८९॥मैहादित्सन्म
 सुद्रकायकोभ्रन्तखान्यासुद्रहोमयापदिऊऊमैजन्मन्द॥९०॥तनहीसुयानारी
 दूतहीनधर्मोजनम्॥वस्त्रहीन्मल्लंक्षारंदिवाहीनंदिजोत्तमम्॥९१॥वाहीस्त्रीधिउ

॥ राम ॥
॥ ३४ ॥

मभयाकोभोजकषट्गानमैगहनालगाउतुडलो कल्माजनिवियानपठन्याब्राह्मराई
तिहरकोसोभाऊन॥८॥श्रीभतेशालिलेपसंश्रीभतेब्राह्मरातोप॥श्रीभतेतपस्या
उकोबराभरस्यसोभते॥८८॥कमलभयाकोतलाउतपस्यागन्याब्राह्मराभराहर
राकायाउलेसोभाऊन॥८८॥यतोत्सवंचविप्राणांमृगिणांकलहोत्सवं॥पु
रुत्सवंचनारीणांगवांनचसुराणोत्सवं॥८९॥यत्तगन्याब्राह्मराकोयज्जगज्जगन्यापु
रुकोयउतमंस्त्रीभयाकोयस्मेतउत्तमहो॥९०॥अग्निहोत्रफलंवेदशीलवृत्तिफलं
श्रुतम्॥रतीपुत्रफलानारीदत्तमुक्तंफलंधनम्॥९०॥वेदपठन्याअग्निहोत्रगन्यापुरा
णभन्याशिलवनपरिउतस्त्रीसंक्रगर्भदोरापाउतुयोफलो॥९०॥नग्निर्दहतितापे
नक्ष्मिर्दहतिशिमि॥राजादहतिडंडेनतपस्याब्राह्मरादहेत्॥९१॥अग्निलेस्म
र्यलेनेजलेराजालेडंडलेब्राह्मरालेतपस्यालेखागगरिडराउछत्॥९१॥शानसा

॥ बुद्धिवा ॥
॥ ३५ ॥

कसृतं मांसं करोरामयितं दधि ॥ दत्तं धावनं तर्जन्यानुले ज्ञो मां यमक्षणात् ॥ ५२ ॥
नालुको सागसि ना को मा सुहाले तथे को दहि जो जौ लाले दांत मा रे गाई को मा सुधा
ये वरा वरु न्द ॥ ५३ ॥ न हन्या न मति दया अन्य मा तं न दृश्यते ॥ त्रयशं कान्परित्यज्य
मक्ष मांसं युधिष्ठिर ॥ ५४ ॥ आक्रान्तं न धजे न लिपुर्वरय तस्मै त्मा को मा सुखाया को पा
पदैन हे सु धिष्ठिर भन्या कलचन्द्र को वचं न्द ॥ ५५ ॥ चतुसागरं पृथ्वीं तां यो दद्यात्
यि क्षीमि मां ॥ न खादे चापियो मांसं तुल्यमेतद्विदुर्वृधा ॥ ५६ ॥ जो हिंसा मा सु भर्जनं रावा
न भ ते चक्रवर्ति राजाले सम्पूर्णं राज्यं दां गन्धर्वाय पाठु ॥ ५७ ॥ न मांसं यमक्षणात्
दोषा न मध्वं न च मैथुनम् ॥ प्रविनिरेव भूतानां वृत्तिस्तु महाफलम् ॥ ५८ ॥ यज्ञ मा
को मा सुदेवता का पूजा का संसर्ग मत् आक्षिप्तिका रज्जो मैथुं गदा दोष दैनं को डरा
हुतो पुराय ॥ ५९ ॥ शुष्क मांसांस्तृणैश्च वा लार्कस्त रणो दधि ॥ प्रभाते मैथुनं नि

॥ राम ॥
॥ ३५ ॥

न्द्रासयप्रागाहरागिषट् ॥ ९६ ॥ सुकेकोमासुजेठिस्त्रिदिकोतिन्द्रामैधुंवाल्सूर्यस्त
रुगोदहियोदकांलेजायुयट् ॥ ९६ ॥ अग्निगपत्त्रीयोसूर्यसर्वराजकुलानिच ॥
नित्यमेवोपचारेणसद्यप्राणानाशानिषट् ॥ ९७ ॥ भागोपानिस्त्रीसूर्यराजाकाकुल
सर्वईदकोविश्वसगन्धाप्राणकोनामरुन्ध ॥ ९७ ॥ सद्यमांघृतं सद्यवाल्वास्त्रीक्षीरभो
जनम् ॥ ९८ ॥ उल्लोदकस्तूरकायासद्यप्राणकरानिषट् ॥ ९८ ॥ नाजायितुमासुस्तूरणीवाल्वा
स्त्रीदुदनातोपानिस्तूरकोद्यायोद्यलेभायुर्दीवठाउद ॥ ९९ ॥ जन्मादद्रागुरांपृष्टपृ
ष्टदद्रागुरांघृतंघृतंदद्रागुरांमांघंमांघंदद्रागुरापयः ॥ पयंदद्रागुरांतेलंमर्दयेन्नच
भक्षति ॥ ९९ ॥ भाभन्दापिठोमादद्रावरुणपिठविश्वमासुतिसदुदचालिसतेलपचासं
उवर्त्तनागतदित्वाभरुणानुतेलपयः ॥ १०० ॥ पञ्चद्विप्रंविनश्यन्तिस्त्वोत्तुष्टस्त्वयो
नशा ॥ जमीमानीचकासीचगुरुदेवित्तथैवच ॥ १०० ॥ लोमिप्रापिकृतघ्नमहंकारिभ

॥ उदिवा ॥
॥ ३६ ॥

मिमनिदितादेजुवारिगुरुकोनिन्दागत्यायेतिकोचोडेनेनाशरुन्द ॥ १०० ॥ गोमि
विप्रैश्चदेवैश्चसन्निमित्तसत्यवादिभिः ॥ अलुचोदानशीलैश्चसप्रमिधार्प्यतेजगत्
॥ १०१ ॥ गाईब्राह्मणादेवतासत्यसन्निनिर्लोमिदातायेति ॥ जनालेपुष्टिधारणा
गरेकादत् ॥ १०१ ॥ भसारेखलुसन्सारेसारमेतच्चतुष्टकम् ॥ काश्यावासशातास
ओ गङ्गनसम्भूज्जनम् ॥ १०२ ॥ योभसार्हपिसन्सार्मासार्वस्तुचार्थोक्तका
शिवासजानुसाधुसङ्गर्तुसत्त्वोत्तनुगङ्गाजलवानुश्रीपरमेश्वर्कोपूजागर्तु
परागमुत्तुदागर्तुयोसार्वस्तु ॥ १०२ ॥ धनानिभूमेपशवोऽश्वगोह्येभार्ज्यगृ
हदारजनास्तशान्ते ॥ देहधितायापरलोकसोर्गकर्मनुगागच्छतिजीवल्लो
का ॥ १०३ ॥ कमायाकोजतिर्धमद्वमागाईभैसिगोरुमारुपीयकीठोकामाश
रीर्त्तोचिह्नामादा ॥ ७ ॥ भाईहरुमशास्माराविरवालिधर्मरजधर्मसाथमाति

॥ राम ॥
॥ ३६ ॥

॥ उदिचा ॥
॥ ३१ ॥

करधिकारिलोकाकाडि ताके मायो जीव मात्र लिगयो हेर साथ माना तेव
तु ताके हिरहे न दन समात्काराले सत सङ्ग कथा पुराण हरि हर्को पूजा ग
द्वारा वयोनिवार चौराखित्ताख पुमि पाया को जाग्रित भवसा तमु माठ
भनिवान क अखिले को रालाई शि श्यागर्त मो ॥ १०३ ॥ इति श्री नाना शास्त्र
संग्रहे चानक सार तृतीय सर्ग क म समाप्तं शुभम् ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥
सम्बत १७३३ सप्तम्युतासी भाद्र शुक्ल चतुर्दशी बुधवार ॥ लेख्यो वद्वि मोहन ले
देवन तीज्याल मावसी पठने का न्हा का दोराले क म्बर्क सि ॥ १ ॥ अतिकष्ट गरि
वशीलेखियो क म्बर्क सि ॥ हेतु सत जन हस्तव सिव मनु उद्वि क सि ॥ २ ॥ उचति
चह रुजति माफ राखि सच्याइ निरुतेति ॥ लेकना विराउते सब को गति उद्वि सां ह रुलि
उहो स विनति येति ॥ ३ ॥ मेरो लुभ जन हो मां नु वेदार्पो ड्याल थको नाम उद्वि मोह
न होत ॥ शुभम् शुभा कु शुभम् शुभा शुभम् शुभा शुभम् शुभा शुभम् ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

॥ राम ॥
॥ ३१ ॥



STANFORD
2446
ASIA ARCHIVES